



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 219]

नई दिल्ली, शुक्रवार, सितम्बर 17, 2004/भाद्र 26, 1926

No. 219]

NEW DELHI, FRIDAY, SEPTEMBER 17, 2004/BHADRA 26, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

अंतिम जांच परिणाम

नई दिल्ली, 16 सितम्बर, 2004

विषय: भारत में यूरोपीय यूनियन, नाइजीरिया और थाइलैंड से 6-हेक्सानेलाक्टम के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच - अंतिम जांच परिणाम

सं. 14/15/2003-डीजीएडी.— 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं वसूली और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए;

क. प्रक्रिया

- (i) जापान, यूरोपीय यूनियन, नाइजीरिया और थाइलैंड से 6-हेक्सानेलाक्टम (जिसे कैप्रोलाक्टम के नाम से भी जाना जाता है) के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने हेतु विधिवत् रूप से अद्यतन किया गया आवेदन 12 सितम्बर, 2003 को प्राप्त हुआ था जिसमें जापान, यूरोपीय यूनियन, नाइजीरिया और थाइलैंड मूल के अथवा वहां से निर्यातित 6-हेक्सानेलाक्टम के पाटन का आरोप लगाया गया है।
- (ii) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत आवेदन की प्रारंभिक जांच में कतिपय कमियां प्रकट हुई थी जिन्हें बाद में याचिकाकर्ता द्वारा ठीक कर दिया गया था। अतः याचिका को विधिवत् प्रलेखित माना गया था।

- (iii) प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर जापान, यूरोपीय यूनियन, नाइजीरिया और थाइलैंड से संबद्ध वस्तु के आयातों के खिलाफ जांच शुरू करने का निर्णय लिया। प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमों के उप-नियम 5(5) के अनुसार जांच की कार्रवाई शुरू करने से पहले पाटन के आरोप की प्राप्ति के विषय में नई दिल्ली में जापान, यूरोपीय यूनियन, नाइजीरिया और थाइलैंड दूतावास को सूचित किया।
- (iv) प्राधिकारी ने 22 सितम्बर, 2003 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था जिसके द्वारा जापान, यूरोपीय यूनियन, नाइजीरिया और थाइलैंड के मूल अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध माल के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच शुरू की गयी थी जो सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची-1 के सीमाशुल्क कोड 29337100 के अंतर्गत वर्गीकृत है।
- (v) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनका ब्योरा याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध करवाया गया था) निर्यातक देशों की सरकारों को भेजी और नियम 6(2) के अनुसार उन्हें अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया।
- (vi) भारत में संबद्ध माल के सभी ज्ञात निर्यातकों एवं आयातकों (जिनके ब्योरे याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराए गए) आवेदन की प्रति भेजी और उन्हें सलाह दी कि वह नियम 6(3) के अनुसार पत्र जारी होने की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित में अपने दृष्टिकोण से अवगत कराएं;
- (vii) नियम 6(4) के अनुसार, संगत सूचना मंगाने हेतु 10 ज्ञात निर्यातकों और 6 आयातकों/प्रयोक्ताओं को एक प्रश्नावली भेजी गयी थी।
- (viii) नियम 6(2) के अनुसार नई दिल्ली में संबद्ध देशों के दूतावासों को जांच शुरू होने के बारे में सूचित किया गया था और साथ ही उनसे यह अनुरोध भी किया गया कि वे अपने देश के सभी संबद्ध निर्यातकों/आयातकों की प्रश्नावली का उत्तर निर्धारित समय के भीतर देने की सलाह दें। नियम 6(3) के अनुसार भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों को ज्ञात निर्यातकों को भेजे गए पत्रों, आवेदन पत्र और प्रश्नावली की प्रतियां भी भेजी गई थीं।
- (ix) केवल निम्नलिखित निर्यातक/उत्पादक द्वारा प्रश्नावली/अधिसूचना का उत्तर/सूचना प्रस्तुत किया गया था:-
1. मैसर्स डी एस एम, नीदरलैंड्स (यूरोपीय यूनियन), थाइलैंड, जापान और नाइजीरिया और ई यू के अन्य निर्यातकों ने सहयोग नहीं दिया है।
- (x) - मैसर्स मित्सुबिशी कारपोरेशन एक व्यापारिक कंपनी है और यह टोरे उद्योग का प्रतिनिधित्व करती थी। तथापि, प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया गया था।

मैसर्स बी ए एस एफ ने इस मामले में केवल अपनी रूचि के बारे में सूचित किया था। बी ए एस एफ द्वारा प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया गया था, क्योंकि उन्होंने यह दावा किया था कि विचाराधीन उत्पाद की उनकी वार्षिक खेप मगण्य रही है।

- छह आयातक/प्रयोक्ता थे:-

1. मैसर्स निर्लोन लि०
2. मैसर्स जे सी टी लि०
3. मैसर्स एन आर सी लि०
4. मैसर्स मोदीपोन लि०
5. मैसर्स सेंचूरी एंका लि०
6. मैसर्स एस आर एफ लि०

छह आयातकों/प्रयोक्ताओं ने भी इस मामले में अपनी रूचि के बारे में सूचित किया है। छह आयातकों/प्रयोक्ताओं और सहयोगी निर्यातक मैसर्स डी एस एम, नीदरलैंड्स का प्रतिनिधित्व एकल प्राधिकृत प्रतिनिधि द्वारा किया गया था। केवल मैसर्स मोदीपोन लि० और मैसर्स जे सी टी लि० ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया था। मैसर्स सेन्चूरी एंका लि०, ने केवल घरेलू रूचि के बारे में प्रस्तुत किए थे। मैसर्स निर्लोन लि०, मैसर्स एन आर सी लि० और मैसर्स एस आर एफ लि० ने प्रश्नावली का कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया। प्रकटन विवरण में मैसर्स एस आर एफ लि० का नाम गलती से छूट गया था।

- (xi) आवेदक से क्षति के बारे में सूचना मांगी गयी थी जिसे आवेदक द्वारा प्रस्तुत कर दिया गया था।
- (xii) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार, विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों को अपने द्वारा रखी गयी सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखा और उसे हितबद्ध पक्षों द्वारा निरीक्षण किए जाने के लिए खुला रखा।
- (xiii) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत की गयी सूचना के आधार पर सामान्य तौर पर स्वीकार्य लेखाकरण के नियमों (जी ए ए पी) के आधार पर उत्पादन की इष्टतम लागत और भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और विक्रय करने की लागत का निर्धारण किया गया था। टीम द्वारा मैसर्स जी एस एफ सी, वडोदरा का सत्यापन 27/28 नवम्बर, 2003 को और मैसर्स एफ ए सी टी का सत्यापन 17/18 मई 2004 को किया गया था।
- (xiv) निवेदन करने की अंतिम तारीख 1 नवम्बर, 2003 थी। हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध पर समयावधि 17 नवम्बर, 2003 तक बढ़ायी गयी थी।
- (xv) जांच 1 अप्रैल, 2002 से 30 जून, 2003 तक की जांच अवधि (पी ओ आई) के लिए की गयी थी।

(xvi) प्रयुक्त संक्षेपासार/शब्द/मूल्य:

(क)	प्राधिकारी	निर्दिष्ट प्राधिकारी
(ख)	संबद्ध देश	जापान, यूरोपीय यूनियन, नाइजीरिया और थाइलैंड । सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9 क के द्वारा पाटनरोधी शुल्कों के मूल्यांकन, अभिज्ञान एवं संग्रहण हेतु किसी अथवा संपूर्ण क्षेत्र पर विचार किया जाता है ।
(ग)	संबद्ध माल/ विचाराधीन उत्पाद	6-हेक्सानेलाक्टम (कैप्रोलाक्टम)
(घ)	अमरीकी डालर	1 अमरीकी डालर = 48.4 रूपए
(ङ.)	यूरो	1 यूरो = 1.039 अमरीकी डालर
(च)	घरेलू उद्योग/ याचिकाकर्ता/आदेवक	मैसर्स जी एस एफ सी और एफ ए सी टी गुजरात राज्य उर्वरक एवं रसायन लि०, बडोदरा; उर्वरक एवं रसायन ट्रावनकोर लि०; कोची
(छ)	पी ओ आई	जांच अवधि ।
(ज)	निर्यातक (सहयोगी)	मैसर्स डी एस एम, नीदरलैंड

(xvii) अनंतिम उपायों की सिफारिश लगाने हेतु प्राधिकारी के समक्ष पूर्ण रूप से प्रमाणित कोई बाध्यकारी कारण प्रस्तुत नहीं किए थे । प्राधिकारी ने इस मामले को प्रारंभिक जांच परिणाम जारी नहीं किए जाने हेतु उपयुक्त पाया था ।

(xviii) 29 अप्रैल, 2004 को सार्वजनिक सुनवाई की गयी थी । इसमें यूरोपीय यूनियन के आयातकों और मैसर्स डी एस एम नीदरलैंड्स (निर्यातक) और घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था ।

● घरेलू उद्योग द्वारा किए विभिन्न अनुरोधों में और सार्वजनिक सुनवाई के दौरान निम्नलिखित मुद्दे उठाए गए थे:-

- (क) प्रतिवादी निर्यातक मैसर्स डी एस एम का सामान्य मूल्य घरेलू बिक्री के आधार पर होना चाहिए न कि किसी तीसरे देश के निर्यातों के आधार पर ।
- (ख) मैसर्स डी एस एम का कोई अगोपनीय अंश प्राप्त नहीं हुआ था ।
- (ग) अनंतिम उपाय लगाए जाने चाहिए ।
- (घ) उसने मामले की दोषपूर्ण जांच शुरूआत और घरेलू उद्योग को स्वयं के कार्यों से क्षति होने के बारे में निर्यातकों के दावों का खंडन किया है ।

● निर्यातकों ने किए गए विभिन्न अनुरोधों में और सार्वजनिक सुनवाई के दौरान निम्नलिखित मुद्दे उठाए थे:-

- (क) घरेलू उद्योग द्वारा समय पर अगोपनीय अनुरोध का संपूर्ण पाठ प्रदान नहीं किया गया था ।
- (ख) पाटनरोधी जांच की शुरूआत करना पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 का उल्लंघन था ।
- (ग) घरेलू उद्योग को क्षति आंतरिक कारणों और सरकार की नीतियों के कारण हुई है न कि पाटन के कारण ।

(घ) अमोनियम सल्फेट एक महत्वपूर्ण सह-उत्पाद है और इसकी लागत का वास्तविक गैर-क्षतिकारक कीमत का परिकलन करने से पहले विश्लेषण किया जाना चाहिए।

(XIX) सार्वजनिक सुनवाई से पहले लिखित निवेदन 14 मई, 2004 तक प्राप्त हुए थे जिनका आदान-प्रदान उसी दिन कर दिया गया था।

(XX) लिखित निवेदनों का उत्तरहितबद्ध पक्षकारों द्वारा 20 मई, 2004 को प्रस्तुत किया गया था।

(XXI) पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अनुसार विनिर्दिष्ट प्राधिकारी के विचाराधीन आवश्यक तथ्य, जो अंतिम जांच परिणामों का आधार थे, प्रकटन विवरण के रूप में 25 अगस्त, 2004 को जारी किए गए थे। सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को ध्यान में रखा गया जबकि विचाराधीन उत्पाद, समान वस्तु, घरेलू उद्योग, पाटन मार्जिन, क्षति मार्जिन और कारणात्मक संबंध के प्रस्तावों को उत्तर के लिए जारी किया गया था। प्रकटन में दिए गए तथ्यों के होते हुए भी प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए सभी निवेदनों पर गुणदोष के आधार पर विचार किया।

(XXII) हितबद्ध पक्षकारों को सितम्बर, 2004 तक प्रकटन विवरण के उत्तर प्रस्तुत करने के लिए अनुरोध किया गया था। तथापि, यूरोपीय संघ से समय बढ़ाने के लिए मै0 बीएएसएफ, मै0 मोदीपोन लि0 और एसोसिएशन ऑफ सिंथेटिक फाइबर उद्योग द्वारा अनुरोध किया गया था और विनिर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निवेदन प्रस्तुत करने के लिए 8 सितम्बर, 2004 तक समय बढ़ाया गया। घरेलू उद्योग मै0 बी.एस.एम, नीदरलैंड (ईयू के सहयोगी निर्यातकों), छह आयातकों/प्रयोक्ताओं (उपर्युक्त (X) में सूचीबद्ध) के समेकित उत्तर और मै0 बीएएसएफ से उत्तर प्राप्त हुए थे।

(XXIII) घरेलू उद्योग के साथ-साथ निर्यातकों, आयातकों और औद्योगिक प्रयोक्ताओं के प्रतिनिधियों की सुनवाई की गई थी।

2. पाटनरोधी जांच की शुरुआत

(क) पाटनरोधी नियमों की पाटनरोधी जांच प्रारम्भ करने से संबंधित नियम 5 इस प्रकार है :-

(1) उप-नियम 4 में किए गए उपबंध को छोड़कर निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से लिखित आवेदन प्राप्त होने पर किसी आरोपित पाटन की मौजूदगी उसकी मात्रा और प्रभाव का निर्धारण करने के लिए जांच शुरू करेगा।

(2) उप-नियम (1) के अंतर्गत कोई आवेदन उस स्वरूप में होगा जैसाकि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निर्दिष्ट किया जाए और आवेदन का समर्थन निम्नलिखित के संबंध में साक्ष्य द्वारा किया जाएगा :-

- (क) पाटन
- (ख) क्षति, जहाँ लागू हो; और
- (ग) जहाँ लागू हो, ऐसे पाटित आयातों और आरोपित क्षति के बीच कारणात्मक संबंध ।

(3) निर्दिष्ट प्राधिकारी उप-नियम (1) के तहत किए गए किसी आवेदन के अनुसरण में तब तक कोई जांच शुरू नहीं करेगा जब तक कि :

(क) वह समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों द्वारा व्यक्त किए गए उक्त आवेदन के समर्थन अथवा विरोध की मात्रा की जांच के आधार पर यह निर्धारित न कर ले कि उक्त आवेदन घरेलू उद्योग द्वारा अथवा उसकी ओर से दायर किया गया है :

परन्तु यदि आवेदन का स्पष्ट रूप से समर्थन करने वाले घरेलू उत्पादकों का उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा किए जा रहे समान वस्तु के कुल उत्पादन के 25% से कम बनता है तो कोई जांच शुरू नहीं की जाएगी, और

(ख) वह आवेदन में दिए गए साक्ष्यों की यथार्थता और पर्याप्तता की जांच न कर ले और स्वयं को इस बात के प्रति संतुष्ट न कर ले कि निम्नलिखित के बारे में पर्याप्त साक्ष्य हैं-

- (i) पाटन
- (ii) क्षति जहाँ लागू हो; और
- (iii) जहाँ लागू हो, जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए ऐसी पाटित आयातों और आरोपित क्षति के बीच कारणात्मक संबंध ।

स्पष्टीकरण- इस नियम के प्रयोजनार्थ आवेदन को उस स्थिति में घरेलू उद्योग अथवा उसकी ओर से किया गया माना जाएगा यदि इसका समर्थन उन घरेलू उत्पादकों द्वारा किया गया हो जिनका सामूहिक उत्पादन इस आवेदन का समर्थन अथवा विरोध करने वाले घरेलू उद्योग के उस भाग द्वारा उत्पादित समान वस्तु के कुल उत्पादन के 50% से अधिक बनता हो ।

(i) जांच शुरुआत के संबंध में निर्यातक, आयातकों/प्रयोक्ताओं द्वारा उठाए गए मुद्दे

(क) विनिर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा हितबद्ध पक्षकारों को पूरी और उचित अगोपनीय सामग्री उपलब्ध नहीं कराई गई ।

(ख) " कीमत तुलनीयता " के संबंध में व्यापार और बिक्री की मात्रा के स्तरों में अंतर और उनके संभावित प्रभावों को जांच शुरुआत से पहले ध्यान में नहीं रखा गया है ।

(ग) विविध अर्थव्यवस्थाओं जैसे नाइजीरिया, ईयू, जापान, थाईलैंड के लिए एक अकेली समान सामान्य कीमत पर्याप्तता अथवा औचित्य और शुद्धता की जांच पूरी नहीं कर सकती ।

(घ) घरेलू उद्योग द्वारा नाइजीरिया के किसी निर्यातक अथवा उत्पादक के संबंध में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई।

(ङ) 'पोलियामिड्स एवं इंटरमीडिएट (टेक्नान)' पत्रिका की प्रतियों पर विश्वास किया गया जिन्हें अगोपनीय सामग्री के साथ उपलब्ध नहीं कराया गया। प्रकाशित दस्तावेजों के संबंध में गोपनीयता का दावा नहीं किया जा सकता।

(च) घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से के संबंध में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई।

(ii) घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए मुद्दे

(क) निर्यातक द्वारा उठाए गए प्रत्येक मुद्दे का घरेलू उद्योग द्वारा करार के संबंधित प्रावधानों तथा पाटनरोधी नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी के दायित्वों और डब्ल्यू टी ओ पैनलों तथा अपीलीय निकायों के विभिन्न मुकदमों के कानूनों को उद्धृत करके खंडन किया गया था। घरेलू उद्योग ने यह उल्लेख किया था कि उनका आवेदन प्रस्तावित जांच अवधि के रूप में मार्च, 2003 तक की अवधि के लिए पूरा किया गया था तथापि प्राधिकारी ने जांच अवधि को जून, 2003 तक बढ़ा दिया।

(iii) प्राधिकारी के विचार

(क) सभी हितबद्ध पक्षकारों को जांच शुरुआत की सार्वजनिक सूचना, निर्यातक/आयातक प्रश्नावली पाटनरोधी नियमों के नियम 6(2) और नियम 6(3) के द्वारा जांच के लिए अपनाई जा रही प्रणाली का उल्लेख करते हुए एक पत्र के साथ आवेदन का अगोपनीय सारांश उपलब्ध कराया गया था। इसके अतिरिक्त क्षति से संबंधित सभी अतिरिक्त सूचना पाटनरोधी नियमों के नियम 6(7) के द्वारा एक सार्वजनिक फाइल के जरिए सभी हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कसई गई थी। सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध सूचना हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराई गई थी। सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध सूचना हितबद्ध पक्षकारों की पहुंच के लिए खुली रखी गई थी।

(ख) सम्बद्ध देशों में सम्बद्ध वस्तु की निर्यात कीमत के साथ सम्बद्ध देशों में सम्बद्ध वस्तु के बाजार मूल्य के बीच कीमत तुलनीयता की गई थी। पाटित मार्जिन पर पहुंचने से पहले व्यापार के स्तरों को बनाए रखने के लिए समायोजन किए गए थे।

(ग) उपलब्ध उचित सूचना के आधार पर विभिन्न सम्बद्ध देशों के लिए विभिन्न सामान्य मूल्यों पर विचार किया गया था।

(घ) घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा उपलब्ध कराया गया है।

(ड.) निर्यातक/आयातक का दावा अनुचित है जबकि उम्मीद की गई कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना का अगोपनीय सारांश अन्य हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराने से पहले प्राधिकारी द्वारा सत्यापित किया गया है। यह कहना अनावश्यक होगा कि यदि गोपनीय सारांश और अगोपनीय सारांश के बीच तथ्यों की भिन्नता प्राधिकारी के ध्यान में लायी जाती है अथवा प्राधिकारी द्वारा यह पाया जाता है तो संबंधित सारांश को संबंधित हितबद्ध पक्ष द्वारा सही किया जाएगा और बाद में अन्य हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराया जाएगा।

(च) जांच की अवधि अप्रैल, 2000 से जून, 2003 की रही है। जांच अवधि का चयन ऐसे तरीके से किया गया था कि जांच को यथासंभव जांच शुरूआत करने की तारीख के निकट लाया जा सके और पाटन के साथ-साथ क्षति के बेहतर विश्लेषण के लिए एक प्रतिनिधि अवधि को शामिल किया जा सके। पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(5) के तहत प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(2) के अंतर्गत निर्धारित प्रारूप में आवेदक से आवेदन प्राप्त होने के पश्चात भारत में जापान, यूरोपीय संघ, नाइजीरिया और थाईलैंड के दूतावासों को सूचना दी। प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(3) के तहत घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य से संतुष्ट होने के बाद सम्बद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तु के आयातों की पाटनरोधी जांच शुरू की थी।

ख: विचाराधीन उत्पाद

(3) विचाराधीन उत्पाद जापान, यूरोपीय संघ, नाइजीरिया और थाईलैंड के मूल का अथवा वहाँ से निर्यातित 6-हैक्सानिलैक्टम है। 6-हैक्सानिलैक्टम एक मोनोमर है और नाइलो-6 के उत्पादन के लिए आधार सामग्री है। 6-हैक्सानिलैक्टम को तरल और ठोस दोनों रूपों में उत्पादित किया जाता है और बेचा जाता है। इस सामग्री का तरल रूप केवल उन ग्राहकों द्वारा प्रयोग किया जा सकता है जो इन सामग्री के स्रोत के बहुत निकट हैं। भारत के उत्पादक इस सामग्री का केवल ठोस रूप प्रयोग करते हैं। इस सामग्री का ठोस रूप सफेद क्रिस्टल अथवा फ्लेक रूप में होता है। भौतिक रूपों में अंतर के अलावा तरल अथवा ठोस रूप में कोई अन्तर नहीं होता है। इसके अतिरिक्त दो ठोस रूप भी एक दूसरे से केवल भौतिक रूपों के अनुसार भिन्न होते हैं उसको वाणिज्यिक रूप से कैपरोलैक्टम के रूप में भी जाना जाता है।

6-हैक्सानिलैक्टम को प्राथमिक रूप से नायलोन-6 के उत्पादन में प्रयोग किया जाता है जिसे नायलोन धागा बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। नाइलोन धागे को (क) परिधानों; और (ख) कॉयर कोर्ड फैब्रिक में प्रयोग करने के लिए नायलोन फैब्रिक के उत्पादन के लिए प्रयोग किया जाता है।

6-हैक्सानिलैक्टम सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत है। सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार उत्पाद का पूरा विवरण 29337100 6-हैक्सानिलैक्टम (एप्सीलोन-कैपरोलैक्टम) है।

किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा विचाराधीन उत्पाद के संबंध में कोई मुद्दे नहीं उठाए गए थे।

ग. समान वस्तु

(4) आवेदक द्वारा उत्पादित 6-हैक्सानिलैक्टम (कैपरोलैक्टम) और जापान, यूरोपीय संघ, नाइजीरिया और थाइलैंड से आयातित उत्पाद भौतिक और रासायनिक गुणों, कार्यों और प्रयोगों, उत्पाद विनिर्दिष्टताओं, मूल्य निर्धारण, वितरण और विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशिष्टताओं के अनुसार तुलनीय है। हालांकि 6-हैक्सानिलैक्टम के उत्पादन के लिए अलग-अलग विनिर्माण प्रक्रिया/प्रौद्योगिकियाँ प्रयोग की जाती हैं परन्तु अन्तिम उत्पाद की तुलनीय विशिष्टताएँ हैं और इसे एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। आयातित और घरेलू तौर पर बेचे जाने वाले उत्पाद तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। ग्राहक इन दोनों को एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग करते हैं। याचिकाकर्ता कंपनी द्वारा उत्पादित 6-हैक्सानिलैक्टम पाटनरोधी नियम 2(घ), जो निम्नानुसार है, के अनुसार जापान, यूरोपीय संघ, नाइजीरिया और थाइलैंड से आयातित वस्तु के समान वस्तु है।

“समान वस्तु” का तात्पर्य किसी ऐसी वस्तु से है जो भारत में पाटित किए जाने के लिए जांच के अधीन उत्पाद से हर प्रकार से समरूप या समान है अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में ऐसी किसी अन्य वस्तु से है जो यद्यपि प्रकार से समरूप नहीं है तथापि जिसकी विशेषताएँ जांच के अधिन वस्तुओं से काफी मिलती जुलती हैं;

कैपरोलैक्टम का उत्पादन प्रथमतः द्रव रूप में किया जाता है। कैपरोलैक्टम मोनोमर को नायलोन-6 पोलिमर के उत्पादन के लिए द्रव रूप में पसंद किया जाता है तथापि द्रव रूप की डिब्बाबंद अवधि 85 सेन्टीग्रेट तापमान पर अधिकतम 2 सप्ताह है और इस द्रव को आद्रता से दूर रखना होता है। इस तरह से इसे कैपरोलैक्टम उत्पादन स्थलों के निकट के नायलोन उत्पादन स्थलों में प्रयोग किया जा सकता है। अथवा अनियंत्रित रूप से ठोस होने अथवा विकृत होने से रोकने के लिए विशेष रूप से सज्जित टैंकरों, गरम यानों में ढोना पड़ता है। दूरस्थ स्थानों में कैपरोलैक्टम के प्रयोग के लिए द्रव को पपड़ी में रखना होता है जिसे कुछ स्थिरता प्राप्त हो जाती है और इस प्रकार पपड़ी का डिब्बाबंद जीवन एक वर्ष तक बढ़ जाता है। दोनों रूपों के अन्य सभी भौतिक और रासायनिक गुण समान हैं और अन्तिम प्रयोग भी समान रूप से होता है। पपड़ियों के प्रयोक्ताओं को नायलोन-6 के उत्पादन के लिए प्रयोग करने के लिए इसे पुनः द्रव रूप में परिवर्तित करना होता है। कैपरोलैक्टम पपड़ियों की स्थिरता और इसे पुनः परिवर्तित करने की प्रक्रिया की उत्पाद (पपड़ियों) की कीमत निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसा कि तकनीकी पत्रिकाओं से स्पष्ट है कि पूरे एशिया में पपड़ियों का प्रयोग किया जाता है जबकि यूरोप (जिसकी वैश्विक उत्पादन क्षमता 40% है) में पपड़ियाँ केवल निर्यात के लिए तैयार की जाती हैं परन्तु घरेलू प्रयोक्ता उद्योग नायलोन-6 के उत्पादन के लिए अधिकांशतः द्रव कैपरोलैक्टम का प्रयोग करता है। द्रव रूप की कीमतें अधिकतर सुसंगत गुणवत्ता और द्रव की सुसंगत आपूर्ति द्वारा निर्धारित होती हैं और इसक प्रयोक्ताओं को पपड़ी प्रयोक्ताओं से अधिक प्राथमिकता प्राप्त होती है। भारत में घरेलू उद्योग अपने घरेलू क्रेताओं को पपड़ियाँ बेचता है।

द्रव और पपड़ी के रूप और मूल्य निर्धारण ढाँचे में अंतरों से संबंधित मुद्दे आवेदक और निर्यातक द्वारा उठाए गए थे। बाद में विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को दल द्वारा उनकी जांच की गई थी। उपर्युक्त कारणों से प्राधिकारी इन दोनों को पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के तहत विभिन्न रूपों की समान वस्तु

समझते हैं। तथापि, यूरोपीय संघ के बाजार में भौतिक रूप/दोनों में अंतर, जिसके फलस्वरूप दोनों रूपों की बाजार कीमतों में अन्तर आता है, के लिए किए गए समायोजनों से संबंधित विचार पैरा (7) में क्रिया जा रहा है।

घ. घरेलू उद्योग

(5) आवेदन मै0 गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स एंड कैमिकल लि0, बदोदरा (जीएसएफसी) द्वारा दायर किया गया था। इसका समर्थन फर्टिलाइजर्स एंड कैमिकल्स ट्रावनकोर लि0 (एफएसीटी) द्वारा किया गया था। जी एस एफ सी और एफ ए सी टी देश में उत्पाद के अकेले उत्पादक हैं इसलिए वे सकल भारतीय उत्पादन करते हैं। याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियम 2(घ) के अर्थों में स्थिति की शर्तों को पूरा करते हैं।

किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा कोई मुद्दे नहीं उठाए गए हैं।

ड. पाटन मार्जिन

6. सामान्य मूल्य

किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :

(क) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशायित हो,

(ख) जब व्यापार के सामान्य रूप में निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में समान वस्तु की बिक्री न हो या जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में विशेष बाजार स्थिति या बिक्री की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्री से उचित तुलना नहीं की जा सकती, तब सामान्य मूल्य इनमें से कोई एक होगा;

(i) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु का यथानिश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या

(ii) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत :

" बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा।"

अनुबंध-1 (पाटनरोधी नियमावली)

4. प्रशासनिक बिक्री तथा सामान्य लागतों और अधिनियम की धारा 9क की उपधारा (1) में यथाउल्लिखित लाभ की राशियां निम्नलिखित पर आधारित होंगी।

(i) वस्तुओं की समान सामान्य श्रेणी के मूल के देश के घरेलू बाजार में उत्पादन और बिक्रियों के संबंध में प्रश्नगत निर्यातक अथवा उत्पादक द्वारा खर्च की गई और वसूल की गई वास्तविक धनराशि।

(ii) कोई (अन्य) उचित पद्धति बशर्ते इस प्रकार सिद्ध लाभ की राशि मूलता के देश के घरेलू बाजार में समान सामान्य श्रेणी के उत्पादन की बिक्री से निर्यातकों अथवा उत्पादकों द्वारा सामान्य तौर पर प्राप्त लाभ से अधिक नहीं होगी।

6 (i) " पाटन मार्जिन निकालते समय, निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना करेगा। यह तुलना व्यापार के समान स्तर पर सामान्यतः कारखाना द्वारा स्तर पर की जाएगी और यथा संभव उसी समयावधि के दौरान की गयी बिक्रियों के संबंध में की जाएगी। जो अंतर तुलनीयता पर प्रभाव डालते हैं, उनके लिए प्रत्येक मामले में गुण-दोष के आधार पर समुचित छूट दी जाएगी, अंतर में शामिल है-बिक्री की शर्तें, कराधान, व्यापार के स्तर, मात्राएं, वास्तविक विशेषताएं तथा अन्य अंतर जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किए जाते हैं।"

प्राधिकारी ने सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9 क (1)(ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भेजी थीं।

(7) उपर्युक्त पैरा (4) में यथावर्णित कैप्रोलेक्टम को मै0 डीएसएम, नीदरलैंड द्वारा घरेलू बाजार में मोल्टेन (पिघली हुई) अवस्था में बेचा गया है। घरेलू बिक्री में से अधिकांश उसके संबद्ध पक्षकार को की गई हैं। मै0 डीएसएम द्वारा भारत और भारत से अलग अन्य तीसरे देश को किए गए सभी निर्यात फ्लेक्स के रूप में किए गए थे। मेल्ट की कीमतें हमेशा फ्लेक्स की कीमतों से अधिक रही हैं। सामान्य मूल्य का निर्धारण बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्ययों जमा निर्यात के प्रयोजनार्थ तैयार उत्पाद पर निर्यातक को प्राप्त तर्कसंगत लाभ समेत फ्लेक्स की उत्पादन लागत के आधार पर अवस्थाओं में अंतर होने पर बाजार मूल्य में अंतर के युक्तिसंगत अनुमान के लिए संगत समायोजन करते हुए किया गया है। इस प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य का परिकलन पैरा 9(क)(क)(ग) के तहत किया गया है।

इस प्रकार जब उत्पाद के अलग-अलग किस्मों और उस विशेष बाजार स्थिति जिसमें उत्पाद की दोनों किस्में रखी गयी हों, के कारण निर्यातक के घरेलू बाजार में पिघले हुए कैप्रोलेक्टम के साथ भारत को निर्यातित कैप्रोलेक्टम फ्लैक्स की कीमतों की सरलता से प्रत्यक्ष रूप से तुलना नहीं हो पायी तो सामान्य मूल्य का निर्धारण ई यू से सहयोगी निर्यातक के लिए तर्कसंगत लाभ जोड़कर सत्यापित उत्पादन लागत के आधार पर किया गया था।

ईयू के असहयोगी निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य सहयोगी निर्यातक के उत्पादन लागत जमा जाँच अवधि में सहयोगी निर्यातक द्वारा अर्जित अधिकतम लाभ पर आधारित था। यह पाटनरोधी नियमावली में शामिल दायित्वों के अनुरूप है।

थाईलैंड के लिए सामान्य मूल्य जांच अवधि के दौरान मै0 टेक्नोन आर्बीकेम द्वारा बतायी गयी औसत कीमतों पर आधारित था।

नाईजीरिया के लिए सामान्य मूल्य घरेलू उद्योग से उपलब्ध साक्ष्यों पर अंतर्राष्ट्रीय कीमतों के आधार पर परिकलित लागत जमा तर्कसंगत लाभों पर आधारित था ।

जापान से सामान्य मूल्य जाँच अवधि के दौरान एशियाई बाजार में टेक्नोन आर्बिकेम द्वारा बतायी गई औसत कीमत पर आधारित था ।

पाटन मार्जिन की गणना के प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य को नीचे पैरा (9) में तालिकाबद्ध किया गया है ।

(8) निर्यात कीमत :

निर्यातक द्वारा दावा की गई निर्यात कीमत को आयातक के आंकड़ों और जाँच अवधि के लिए वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय के सौदावार आयात संबंधी आंकड़ों के साथ सत्यापित किया गया था । निर्यातक के सत्यापन के दौरान जाँच अवधि के दौरान भारत को निर्यातों के बीजकों की जांच की गई थी और एफ ओ बी स्तर से पहले और उसके बाद (समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, नीदरलैंड में पत्तन व्यय; नीदरलैंड में अंतर्देशीय भाड़ा; ब्याज कमीशन) के समायोजनों का विश्लेषण करने के बाद ईयू के सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत *** डा./प्रति मी. टन और ईयू के असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए *** डा./मी.टन ली गई है । सहयोगी निर्यातक की न्यूनतम निर्यात कीमत को असहयोग को हतोत्साहित करने के लिए असहयोगी निर्यातकों की निर्यात कीमत माना गया है ।

थाईलैंड, नाईजीरिया और जापान से निर्यात कीमत भारत में सी आई एफ कीमतों पर आधारित उपलब्ध तथ्यों के आधार पर परिकलित निर्यात कीमत पर आधारित थी जैसा कि डीजीसीआईएण्ड एस द्वारा समुद्री भाड़ा बीमा, प्रहस्तन प्रभारों, कमीशन इत्यादि हेतु किए गए समायोजनों के साथ दर्शाया गया है ।

(9) पाटन मार्जिन :

सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत जैसाकि ऊपर ब्यौरा दिया गया है, पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है ।

देश	सामान्य मूल्य (डा./मी.टन)	निर्यात मूल्य (डा./मी.टन)	पाटन मार्जिन	
			डा./मी.टन रु./मी.टन	%
ईयू (मै0 डीएसएम, नीदरलैंड)	****	****	****	(1.77)
ईयू (अन्य)	****	****	****	10.11
थाईलैंड	1136	930.08	205.92	22.14
नाईजीरिया	1135	813.54	321.46	39.51
जापान	1136	996.37	139.63	14.01

(10)

(10) क्षति का विश्लेषण एवं कारणात्मक संबंध

क्षति का विश्लेषण एवं निर्धारित कारणात्मक संबंध नीचे दिया गया है। निम्नांकित तालिका का प्रयोग इसी के लिए किया जा रहा है।

क्षति संबंधी तालिका													
क्र.सं.	विवरण	1999-2000			2000-2001			2001-2002			अप्रैल, 02 से जून, 02 (जब अवधि)		
		मात्रा	मूल्य	मी. टन	मात्रा	मूल्य	मी. टन	मात्रा	मूल्य	मी. टन	मात्रा	मूल्य	मी. टन
1	विक्री में प्राकृतिक एवं संभावित गिरावट												
	घरेलू बिक्रियां												
	घरेलू उद्योग	मी. टन	73534	50924	72290	51305	66985	91641	57472	73313	45978		
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	100.00	98.31	100.75	91.09	99.70	90.29	99.70	90.29		
2	लाभ एवं बिक्री												
	उत्पादन लागत												
	घरेलू उद्योग-भारित औसत												
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	100.00	120.28	103.18	123.72	123.72	123.72	123.72	123.72		
	निवल बिक्री प्राप्ति												
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	100.00	102.62	76.13	90.35	90.35	90.35	90.35	90.35		
	लाभ/हानि-घरेलू												
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	100.00	51.96	-1.44	-5.35	-5.35	-5.35	-5.35	-5.35		
3	रोजगार (प्रवृत्ति)		100	100.5	94.1	88.8	88.8	88.8	88.8	88.8	88.8		
	उत्पादकता (प्रवृत्ति)		100	101.5	99.8	93.5	93.5	93.5	93.5	93.5	93.5		
	घरेलू उद्योग का	मी. टन	115370	117592	108411	119690	95752	95752	95752	95752	95752		

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	100.10	95.04	96.46	96.46
6. उत्पादन						
घरेलू उद्योग	मी. टन	115370	117592	108411	119690	95752
क्षमता	मी. टन	120000	120000	120000	150000	120000
क्षमता उपयोग	%	96.14	97.99	90.34	79.79	79.79
प्रवृत्ति		100.00	101.93	93.97	83	83
7. लगाई गई पूंजी पर आय	सूचीबद्ध	100		84.7	58.2	50.1
घरेलू उद्योग का नकद लाभ	सूचीबद्ध	100		59.3	16.1	-61.1
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00		59.28	16.13	-48.88
9 मंडार सूची						
घरेलू उद्योग						
प्रवृत्ति		100.00	22.94	49.57	24.46	24.46
10 वेतन	सूचीबद्ध					
घरेलू उद्योग	सूचीबद्ध	100		106.8	138.1	143.3
वृद्धि						
कारोबार में वृद्धि	सूचीबद्ध	-		0.88	-30.65	12.60
बिक्री मात्रा में वृद्धि	सूचीबद्ध	-		-1.69	-8.91	-0.30
सूचीबद्ध मांग में वृद्धि	सूचीबद्ध			7.03	1.35	9.08

(11) क्षति विश्लेषण एवं कारणात्मक संबंध

वर्ष 1999-2000 से जून, 2003 तक की अवधि के लिए उपर्युक्त सारणी में दिए गए मापदंडों सहित सभी संगत आर्थिक कारकों एवं उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों के मूल्यांकन सहित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच के साथ प्रत्येक मापदंड हेतु प्रवृत्ति विश्लेषण निम्नानुसार है। जापान, ई यू, थाइलैंड तथा नाइजीरिया से हो रहे आयात लगातार पाटनरोधी जांच के अधीन हैं तथा यह प्रस्ताव किया गया है कि चूँकि पाटन मार्जिन, निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त प्रतिशत से दो प्रतिशत से अधिक है (मै0 डी एस एम द्वारा निर्यातों को छोड़कर) तथा प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों के तीन प्रतिशत से अधिक है, तथा आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति के आलोक में ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन किया जाना चाहिए।

क्षति विश्लेषण के लिए केवल पाटित मात्रा पर विचार किया गया है।

आयातकों/प्रयोक्ताओं ने यह संकेत दिया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित कैप्रोलैक्टम आयातित उत्पाद के साथ इस्तेमाल किया जाता है।

(i) बिक्री:

घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री लगभग समान स्तरों पर रही है लेकिन बिक्री के मूल्य में गिरावट आई है। ऑटोमोबाइल की मांग तथा उसके परिणामस्वरूप टायर के उत्पादन में हो रही वृद्धि के कारण मांग में उल्लेखनीय वृद्धि को देखते हुए, घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में गिरावट नहीं आई है। मांग में होने वाली लगभग समूची वृद्धि विदेशी उत्पादकों को प्राप्त हुई है, चूँकि घरेलू उद्योग की बिक्री में कोई वृद्धि नहीं हुई है। भारतीय उत्पादकों की क्षमताएं अप्रयुक्त रहने तथा उनके उत्पादन में गिरावट आने के बाद भी घरेलू उद्योग की बिक्री स्थिर रही थी। वस्तुतः उनमें 0.30 प्रतिशत की मामूली गिरावट आई थी। आगे कीमत कटौती के स्तर को देखते हुए तथा सस्ते आयातों की तुलना में उपयोक्ताओं द्वारा कीमत कम करने के अनुरोधों को देखते हुए बिक्री में संभावित गिरावट भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। आवेदकों को उपयोक्ताओं से अनेक पत्र प्राप्त हुए हैं जिनमें आयातों की कम कीमत का हवाला देते हुए कीमत कटौती करने का अनुरोध किया गया है।

हितबद्ध पार्टियों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि हुई है। बिक्री मात्रा लगभग स्थिर रही है। आगे, यद्यपि मांग में 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, घरेलू उद्योग की बिक्री में 9 प्रतिशत की मामूली गिरावट आई है, जैसा कि पूर्ववर्ती पैरा में दर्शाया गया है।

(ii) लाभ एवं बिक्री:

घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में 23 प्वाइंट (100 प्वाइंट के स्केल पर) की वृद्धि हुई परन्तु बिक्री प्राप्ति में 10 प्वाइंट की गिरावट आई जिसके कारण वर्ष 1999-2000 में घरेलू उद्योग द्वारा कमाया गया मुनाफा जून 03 में घाटे में परिवर्तित हो गया।

घरेलू उद्योग के लाभों में भारी गिरावट आई है। क्षति अवधि के प्रारंभ में बनी लाभ की स्थिति से वर्ष 2002-03 में घरेलू उद्योग वित्तीय घाटे की स्थिति में पहुँच गया था।

(iii) उत्पादन:

वर्ष 1999 से जून, 2003 तक कंपनी की प्रति कर्मचारी उत्पादकता में कमी आई है। यद्यपि घरेलू उद्योग के पास समूचे घरेलू प्रयोक्ता उद्योग की जरूरत को पूरा करने की क्षमता है।

यद्यपि याचिकाकर्ता इस उत्पाद के व्यवसाय में लंबे समय से है तथा उत्पाद की मांग में सकारात्मक वृद्धि हुई है, फिर भी घरेलू उद्योग में कंप्रोलेक्टम के उत्पादन में काफी गिरावट आई है। संबद्ध देशों से आयातों के लाभ में वृद्धि होने के कारण इस महत्वपूर्ण उत्पाद के उत्पादन में घरेलू उद्योग को घाटा हुआ है।

(iv) बाजार हिस्सा:

क्षति विश्लेषण की अवधि में संबद्ध देशों की आयात मात्रा में चार गुना वृद्धि हुई परन्तु अन्य देशों द्वारा भारत को निर्यातों की मात्रा में वृद्धि किए जाने के कारण कुल आयातों में संबद्ध देशों के आयात हिस्से में 10 प्वाइंट की गिरावट आई है। देश की कुल मांग में आयात के हिस्से में भारी वृद्धि हुई है।

- जापान, यूरोपीय संघ, नाइजीरिया तथा थाइलैंड से आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है। वर्ष 1999-00 तथा वर्ष 2000-01 की तुलना में आयातों में हुई तीव्र वृद्धि की पृष्ठभूमि में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में चालू वर्ष के आयातों में आई मामूली गिरावट को देखा जा सकता है;
- घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में आयातों में वृद्धि हुई है;
- भारत में संबद्ध वस्तु की मांग के संबंध में आयातों में वृद्धि हुई है।

(v) क्षमता उपयोग:

क्षति अवधि में कंपनी के क्षमता उपयोग में 17 प्वाइंट की गिरावट आई है। चूंकि सृजित क्षमता में कोई परिवर्तन नहीं है, इसलिए क्षमता उपयोग की प्रवृत्ति उत्पादन के समान रही है। घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आई है।

(vi) लगाई गई पूँजी पर आय:

क्षति अवधि में लगाई गई पूँजी पर आय में 50 प्वाइंट की कमी आई है। निवेश पर आय की प्रवृत्ति लाभ की प्रवृत्ति के समान रही है। यद्यपि पूर्व में निवेश पर आय सकारात्मक थी, परन्तु पाटित आयातों के कारण, घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में कटौती किए जाने के पश्चात यह वर्ष 2002-03 में नकारात्मक हो गई है।

(vii) भंडार सूची:

वर्ष 2000-2001 में भंडार सूची में कमी आई थी तथा इस स्तर को निर्यात बिक्री द्वारा अथवा कैप्रोलैक्टम के उत्पादन को कम करके बनाए रखा गया था। पूर्व में घरेलू उद्योग के पास उच्च स्तर की भंडार सूचियां थीं। घरेलू उद्योग द्वारा लगातार प्रयासों के परिणामस्वरूप भंडार सूची के स्तर में कमी हुई है। घरेलू उद्योग द्वारा की गयी कीमत कटौती द्वारा भी भंडार सूची में कटौती संभव हो सकती है।

(viii) वेतन एवं रोजगार

वेतन एवं रोजगार पर पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक के रूप में विचार नहीं किया गया है। प्रति कर्मचारी उत्पादकता के मामले में, दोनों कंपनियां बहु उत्पाद कंपनियां हैं तथा केवल कैप्रोलैक्टम के लिए ही नियोजित व्यक्तियों की अलग से गिनती करना व्यवहार्य नहीं है। वस्तुतः दोनों कंपनियों में कैप्रोलैक्टम संयंत्र एवं अन्य संयंत्रों के कर्मचारी समान हैं।

(ix) वृद्धि:

कारोबार अथवा बिक्री मात्रा के संबंध में वृद्धि ऋणात्मक रही है तथापि, मांग में 9 प्वाइंट की वृद्धि हुई है। अतः संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की वृद्धि इष्टतम से कम रही है।

जैसा कि उपर्युक्त पैरा से विदित है, घरेलू उद्योग की वृद्धि बाजार वृद्धि से कम रही है। घरेलू उद्योग की वृद्धि की तुलना में मांग में हुई वृद्धि तथा घरेलू उद्योग के पास वस्तुओं के उत्पादन एवं आपूर्ति हेतु उपलब्ध क्षमता के बाद भी, घरेलू उद्योग की इष्टतम से कम वृद्धि से, पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति का स्पष्ट संकेत मिलता है, जैसा कि घरेलू उद्योग की वृद्धि में दर्शाया गया है।

(x) पाटन मार्जिन:

संबद्ध देशों से पाटन का मार्जिन 10.11 प्रतिशत से 39.51 प्रतिशत के बीच रहा है। जापान, यूरोपीय संघ, नाइजीरिया तथा थाइलैंड से हुए आयातों के संबंध में पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है बल्कि उल्लेखनीय भी है।

(xi) पूंजीगत निवेश जुटाने की क्षमता:

अधोगामी प्रवृत्ति एवं नकद घाटों के साथ घरेलू उद्योग में लगाई गई पूँजी पर अल्प आय प्रदर्शित होती है जिसके कारण विशिष्ट रूप से इस उत्पाद के लिए पूँजी निवेश जुटाने के लिए घरेलू उद्योग की क्षमता का क्षरण हुआ है।

घरेलू उद्योग की घटती लाभप्रदता से घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, यद्यपि दोनों आवेदक कंपनियों के समान बहु उत्पाद कंपनियों के मामले में जांचाधीन उत्पाद के लिए अलग से नकद प्रवाह पर विचार करना व्यवहार्य नहीं है।

(xii) केवल पाटित आयातों के प्रभावों का मूल्यांकन किया गया था। घरेलू उत्पादक एवं विदेशी उत्पादकों की प्रौद्योगिकी में किसी अन्तर पर प्रकाश नहीं डाला गया है। प्रौद्योगिकी मुख्यतः मै0 डी एस एम तथा मै0 बी ए एस एफ जैसे विदेशी उत्पादकों से प्राप्त की गयी थी। क्षति मानदंडों का मूल्यांकन करते समय घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन को अलग रखा गया है। व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियों के संबंध में घरेलू उद्योग के विरुद्ध कार्रवाईयों के विषय में किसी भी प्रकार की सूचना प्राधिकारी के ध्यान में नहीं लाई गई है।

(क) पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा एवं मूल्य: यह देखा जा सकता है कि (i) अन्य देशों से आयातों की मात्रा न्यूनतम से कम है; (ii) संबद्ध देशों की आयात कीमत की तुलना में अन्य देशों की आयात कीमत काफी अधिक है। अतः अन्य देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।

(ख) मांग में कमी:- क्षति विवरण से यह देखा जा सकता है कि विचाराधीन उत्पाद की मांग में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गयी है। अतः मांग में कमी घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं हो सकती है।

(ग) खपत के पैटर्न में परिवर्तन:- विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत के पैटर्न में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अतः खपत के पैटर्न में परिवर्तनों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती है।

(घ) प्रौद्योगिकी विकास:- उत्पाद के उत्पादन की प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अतः प्रौद्योगिकी विकास क्षति का कारक नहीं है।

(ङ.) निर्यात निष्पादन:- घरेलू उद्योग की निर्यात मात्राओं में गिरावट आई है। यद्यपि मांग में वृद्धि हुई है तथापि घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की बिक्री मात्राओं में गिरावट आई है। जबकि उत्पाद के लिए मांग में वृद्धि प्रदर्शित हो रही है, घरेलू उद्योग की नकारात्मक वृद्धि स्पष्ट रूप से पाटन के कारण है। किए गए निर्यात मांग में वृद्धि तथा घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट के अंतर के अनुपात में थे। घरेलू उद्योग के पास एक अन्य विकल्प उत्पादन में कटौती का था जिसका परिणाम उत्पादन लागत में अत्यधिक वृद्धि के रूप में होता। अतः, उत्पाद के निर्यातों से घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में कमी करने में सहायता मिली है। घरेलू तथा निर्यात बाजार के लिए घरेलू उद्योग की सूचना अलग-अलग है। अतः घरेलू बाजार में कैप्रोलैक्टम की बिक्रियों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा दावा की गई क्षति पर याचिकाकर्ताओं द्वारा किए गए निर्यातों के कारण किसी प्रकार से कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है।

(च) उत्पादकता:- इस क्षति को अलग करने के लिए क्षति की अवधि में घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त किए गए उत्पादन के सर्वोत्तम स्तर पर विचार करते हुए लाभप्रदता परिकलित की गयी है। इससे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है कि इस बेहतर स्तर पर घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत यह भी दर्शाती है कि उनकी बिक्री कीमत मानकीकृत उत्पादन लागत से कम थी।

जहाँ घरेलू उद्योग की क्षति का कारण उत्पादकता में गिरावट थी, वहीं फैक्ट द्वारा उत्पादन का स्थगन पाटित आयातों का परिणाम था।

(12) कीमत कटौती

घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री प्राप्तियों की तुलना आयातों के पहुँच मूल्य से कर के निर्धारित की गयी कीमत कटौती से यह प्रदर्शित होता है कि आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है जिसके परिणामस्वरूप 10-20 प्रतिशत के बीच कीमत कटौती हुई है।

आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत कम है जिसके परिणामस्वरूप कीमत कटौती हुई है। देश में केप्रोलैक्टम के उपभोक्ताओं की संख्या अत्यंत सीमित है। उपभोक्ताओं को वैश्विक कीमतों की जानकारी है। उपभोक्ताओं द्वारा लिखे गए पत्र, जिनमें अन्य कई देशों द्वारा उपलब्ध कराई जा रही सामग्री की कीमतों का हवाला देते हुए याचिकाकर्ताओं से कीमत कम करने का आग्रह किया गया था, प्राधिकारी को प्रस्तुत किए गए थे जिनसे यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है कि कीमत कटौती के कारण आवेदकों को क्षति हुई है।

इस मामले में कीमत कटौती की उपस्थिति ही वह एकमात्र कारण था जिसके कारण घरेलू उद्योग को कीमतें घटानी पड़ीं। विदेशी उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत की जा रही पाटित कीमतों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग कम कीमतों की पेशकश के लिए बाध्य हुआ है। कम कीमतों की पेशकश करने के बावजूद घरेलू उद्योग कीमत कटौती का सामना करने के लिए बाध्य हुआ है। घरेलू उद्योग द्वारा की गयी कीमत में कमियों के बावजूद कीमत कटौती विद्यमान है।

(13) निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण रिबेट/छूटों, कमीशन, करों तथा शुल्कों को छोड़ कर किया गया था। निवल बिक्री प्राप्ति 45000 रूपए/मी.टन से 65000 रूपए/मी.टन के बीच थी।

(14) कम कीमत पर बिक्री

कम कीमत पर बिक्री का परिकलन घरेलू उद्योग की भारित औसत क्षति रहित कीमत की तुलना भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों के पहुँच मूल्य से करके किया जाता है। पाटित वस्तु की कम कीमत पर बिक्री से घरेलू उद्योग उस कीमत से वंचित हुआ जो उसे घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री से प्राप्त होती। कम कीमत पर बिक्री 10-40 प्रतिशत की सीमा तक थी।

(15) कीमत ह्रास

संबद्ध वस्तुओं की उत्पादन लागत तथा घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत के स्तर पर पाटित आयातों के पहुँच मूल्य में वृद्धि के बावजूद बिक्री प्राप्ति में गिरावट आई है।

पाटित आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत तथा क्षति रहित कीमत से कम है। इसके अतिरिक्त, यद्यपि संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है तथापि निर्यात कीमत में गिरावट के परिणामस्वरूप बिक्री कीमत में गिरावट आई है। अतः, आयातों के कारण घरेलू उद्योग कीमत में वैधानिक वृद्धि नहीं कर पा रहा है।

(क) अमोनियम सल्फेट में हो रही हानि:- विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन से अमोनियम सल्फेट का भी उत्पादन होता है। वस्तुतः दोनों कंपनियों ने अमोनियम सल्फेट को संयुक्त उत्पाद माना है और उन्होंने विचाराधीन उत्पाद तथा अमोनियम सल्फेट के बीच लागतों को विभाजित किया है। अमोनियम सल्फेट के उत्पादन तथा बिक्री में हो रहे घाटे को अनुचित रूप से विचाराधीन उत्पाद के ऊपर आरोपित नहीं किया गया है।

(ख) उर्वरकों में हो रही हानि:- निर्यातक/आयातक ने यह तर्क दिया है कि यादिकाकर्ता मुख्य रूप से उर्वरकों के उत्पादन में शामिल हैं। तथापि, वर्ष 2002-03 में जी एस एफ सी के मामले में रसायनों एवं पेट्रो रसायनों का हिस्सा लगभग 36 प्रतिशत था जबकि फैक्ट के मामले में यह लगभग 33 प्रतिशत था।

इसके अतिरिक्त, रसायनों एवं पेट्रो रसायनों में लैक्टम का एक बड़ा हिस्सा था। वर्ष 2002-03 में जी एस एफ सी के मामले में लैक्टम का हिस्सा 44 प्रतिशत था जबकि फैक्ट के मामले में यह 98 प्रतिशत था।

निवेश के रूप में लैक्टम में निवेश बहुत अधिक रहा है। वर्ष 2002-03 में जी एस एफ सी के मामले में निवल ब्लॉक का 53 प्रतिशत केप्रोलैक्टम में था।

इस प्रकार, विचाराधीन उत्पाद संबंधित कंपनियों के लिए महत्वपूर्ण नहीं है।

(16) पहुँच मूल्य

इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुँच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 3, उक, 8ख, 9 और 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सीमाशुल्क के लागू स्तर तथा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1962 के अधीन सीमाशुल्क द्वारा यथा आकलित निर्धारणीय मूल्य होगा।

आयातों के पहुँच मूल्य का निर्धारण सी आई एफ आयात कीमत के रूप में किया गया है (स्रोत: डी जी सी आई एस) जिसमें 1 प्रतिशत उतराई प्रभार तथा जांच अवधि के लिए लागू मूलभूत सीमाशुल्क शामिल हैं।

(17) पाटित आयातों का कीमत प्रभाव 10-20 प्रतिशत के बीच कीमत कटौती तथा 10-40 प्रतिशत के बीच कम कीमत पर बिक्री से प्रत्यक्ष है। निवल बिक्री प्राप्ति में गिरावट आई है और वह उत्पादन लागत के स्तर तक बनी रही है। लगाई गई पूँजी पर आय में कमी के साथ लाभ में कमी हुई है जबकि मांग में वृद्धि हुई है। क्षति विश्लेषण के लिए रोजगार, वेतन पर विचार नहीं किया जा रहा है।

(18) मात्रात्मक प्रभाव को संबद्ध देशों से आयातों की वृद्धि के रूप में बताया गया है जबकि घरेलू बिक्री स्थिर रही थी जिसके फलस्वरूप सभी संबद्ध वस्तुओं की समूची मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा कम हो गया था ।

चूँकि मांग में वृद्धि से उत्पादन में वृद्धि नहीं हुई थी इसलिए क्षमता उपयोग और उत्पादकता में इस हद तक गिरावट आई है कि संयंत्रों में से एक को बंद करना पड़ा था । वर्ष 2000-2001 के बाद कैप्रोलैक्टम की निर्यात बिक्री अथवा कम उत्पादन की सहायता से भंडार सूची के स्तर को बनाए रखा गया । लंबे समय तक भंडार सूची के उच्च स्तर को बनाए नहीं रखा जा सका क्योंकि उत्पाद की भंडारण अवधि सीमित है तथा यह प्रकृति से आर्द्रताग्राही है ।

(19) क्षति रहित कीमत (एन आई पी)

प्राधिकारी ने विस्तृत विश्लेषण तथा जांच तथा आवेदक कंपनियों द्वारा मुहैया कराई गई सूचनाओं के सत्यापन के पश्चात संबद्ध वस्तुओं के लिए क्षतिरहित कीमत का निर्धारण किया था ।

जांच अवधि तथा पूर्ववर्ती वर्षों के लिए उत्पादन तथा उत्पादन प्रक्रिया से संबंधित सभी संबद्ध कारकों पर लागत सूचना की निर्धारित प्रारूप में मांग की गयी थी । घरेलू उद्योग के लिए संबद्ध वस्तु की वास्तविक उत्पादन लागत का उपयोग लेखांकन के सामान्यतः स्वीकृत सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर इष्टतम उत्पादन लागत निर्धारित करने के लिए किया गया था । घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत का निर्धारण करते समय प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन में प्रयुक्त कच्चे माल की लागत, तत्संबंधी खपत, विद्युत पानी इत्यादि जैसी सुविधाओं की लागत, श्रम की लागत, मूल्य ह्रास की लागत, बिक्री तथा प्रशासनिक व्यय तथा ब्याज लागत सहित सभी संबद्ध कारकों की विस्तार से जांच तथा विश्लेषण किया है । संयंत्र में किए गए निवेश जैसे कारकों तथा क्षमता उपयोग की भी लागत विश्लेषण में जांच की गयी है । इन सभी कारकों का मूल लेखा पुस्तिकाओं तथा उत्पादन एवं वित्तीय विवरणों के संदर्भ में निर्धारण किया गया है । घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत का निर्धारण आवेदकों द्वारा लगाई गई पूंजी पर तर्कसंगत लाभ मार्जिन के उत्पादन की लागत में जोड़कर किया गया है । निर्यातक ने बताया था कि अमोनियम सल्फेट एक महत्वपूर्ण सह उत्पाद है तथा एक वास्तविक एन आई पी पर पहुँचने से पहले इसकी लागत का विश्लेषण किया जाना चाहिए ।

प्राधिकारी ने दो उत्पादों के बीच लागत का अलग-अलग सत्यापन करने के बाद कैप्रोलैक्टम की एन आई पी परिकलित की तथा इस प्रकार अमोनियम सल्फेट से संबंधित किसी लागत को कैप्रोलैक्टम की लागत पर भारित नहीं किया जा सका ।

(20) भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे

यह माना जाता है कि कैप्रोलैक्टम हमेशा संयुक्त रूप से अमोनियम सल्फेट उत्पादित करता है । नाइट्रीकारक उर्वरक के रूप में अमोनियम सल्फेट की वाणिज्यिक मांग पर निर्भर होते हुए उत्पादित अमोनियम सल्फेट का अनुपात कैप्रोलैक्टम के उत्पाद के 1.5 से 4.5 गुने तक परिवर्तित किया जा सकता है । पुराने कैप्रोलैक्टम संयंत्र विश्व भर में अमोनियम सल्फेट की शक्तिशाली नाइट्रीकारक उर्वरक के रूप में बिक्री तब तक करते थे जब तक यूरिया जिसमें नाइट्रोजन की उच्च मात्रा होती है, के उपयोग के

कारण उसका उपयोग केवल विशेष क्षेत्रों में सीमित कर दिया गया था। इसलिए नए कैप्रोलैक्टम संयंत्र पुराने संयंत्रों की तुलना में कम अमोनियम सल्फेट उत्पादित करते हैं। इसके समानांतर बिना कैप्रोलैक्टम वाले नाइलोन चिप्स को कच्चे माल के रूप में उत्पादित करने की प्रौद्योगिकी भी विकसित कर ली गयी है जिसका कि वाणिज्यिक उपयोग होता है।

विश्व भर में लगभग 4.5 मिलियन मी.टन की समूची क्षमता वाले लगभग 43 संयंत्र हैं। विश्व भर में नाइलोन - 6 संयंत्र के लिए कैप्रोलैक्टम की मांग लगभग 3.8 मिलियन टन है। संबद्ध देश में वैश्विक क्षमता का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा शामिल है। यूरोप में कैप्रोलैक्टम के उत्पाद की वैश्विक क्षमता का 30 प्रतिशत है जबकि इसकी नाइलोन-6 की आवश्यकता 22 प्रतिशत है। एशिया में (जापान को छोड़कर) कैप्रोलैक्टम के उत्पादन की क्षमता वैश्विक क्षमता की 19 प्रतिशत है जबकि इसकी आवश्यकता अथवा नाइलोन -6 अनुप्रयोग वैश्विक आवश्यकता का 41 प्रतिशत है। इससे इस क्षेत्र में आयातों के प्रवाह के लिए स्वाभाविक अंतराल उत्पन्न होता है। विश्व भर में 43 संयंत्रों में से 19 संयंत्रों की क्षमता 50000-100000 मी.टन प्रतिवर्ष है तथा 7 संयंत्रों की क्षमता 50000 मी.टन प्रति वर्ष से कम है। संयंत्रों में से अधिकतर (22) बी ए एस एफ/डी एस एम प्रौद्योगिकी वाले हैं।

भारत की कैप्रोलैक्टम उत्पादन की कुल क्षमता 120000 मी.टन है। यह नाइलोन-6 उत्पादकों की जरूरत को पूरा करने के लिए पर्याप्त है जिनकी कैप्रोलैक्टम की आवश्यकता लगभग 1 : 1 के अनुपात में है। यह माना जाता है कि नाइलोन-6 की लगभग 60 प्रतिशत आवश्यकता वस्त्र तथा संबद्ध क्षेत्रों में है जबकि आवश्यकता केवल 40 प्रतिशत औद्योगिक अनुप्रयोग और रेजिन में निहित होता है। नाइलोन टायर कोड फैब्रिक की मात्रा टायरों के भार के अनुसार 10 प्रतिशत से कम होती है जो कि गैर-वस्तु क्षेत्र के उपयोग का काफी अधिक है।

यद्यपि जांच अवधि के बाद अन्य निविष्टियों की कीमतों में स्वाभाविक वृद्धि के साथ-साथ बेंजीन की कीमतें लगभग दुगुनी हो गयीं हैं। तथापि, कैप्रोलैक्टम की कीमतों में लगभग 25-30 प्रतिशत तथा घरेलू बाजार में लगभग 15-20 प्रतिशत तक ही वृद्धि हुई। अंतिम उत्पाद की कीमतों में इस प्रकार की परिवर्तनशीलता परिलक्षित नहीं हुई। वैश्विक रूप से जांच अवधि के बाद निर्यातों के लिए कैप्रोलैक्टम की पूर्ति में कमी देखी गयी। यह स्पष्ट है कि कीमतों में बढ़ोतरी व्यापक रूप से वैश्विक कच्ची सामग्री की कीमत में घट-बढ़ से प्रभावित हुई जिसे औद्योगिक प्रयोक्ताओं को कच्चे माल के रूप में कैप्रोलैक्टम की स्थाई आपूर्ति बनाए रखते हुए घरेलू उद्योग द्वारा वहन किया गया था।

नाइलोन-6 की मांग में कैप्रोलैक्टम से भिन्न कच्ची सामग्री से उत्पादित नाइलोन के ग्रेडों की बाजार में मौजूदगी के बावजूद वृद्धि भी हुई है। भारत में प्रयुक्त प्रौद्योगिकी और प्रचालन स्तर विश्व मानकों के समतुल्य हैं।

प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन सामान्यतः पाटन के व्यापार संबंधी अनुचित व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल की जा सके जो कि देश के सामान्य हित में है।

प्राधिकारी यह स्वीकार करते हैं कि यद्यपि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तु के प्रयोग से निर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धा

पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में इन पाटनरोधी उपायों द्वारा कमी नहीं आएगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन की प्रक्रिया द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे तथा घरेलू उद्योग का ह्रास रुकेगा और उपभोक्ताओं के लिए संबद्ध वस्तु का व्यापक विकल्प बनाए रखने में मदद मिलेगी। पाटनरोधी उपायों को लागू करने से संबद्ध देश से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

(22) निष्कर्ष:

उपर्युक्त पर विचार करते हुए यह देखा जाता है कि:

(क) संबद्ध देशों की मूल की अथवा वहां से निर्यातित सभी रूपों की संबद्ध वस्तुएं भारत को इसके सामान्य मूल्य से कम पर निर्यात की गयी हैं।

(ख) घरेलू उद्योग ने पाटित संबद्ध वस्तुओं का कम पहुँच कीमतों के कारण हुई कीमत कटौती/कम कीमत पर बिक्री के कारण कम निवल बिक्री वसूली (एन एस आर) की वजह से हुए वित्तीय घाटों के रूप में भी वास्तविक क्षति उठाई है।

(ग) घरेलू उद्योग को क्षति संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण हुई है।

(घ) प्राधिकारी संबद्ध देश की मूल की अथवा वहां से निर्यातित अध्याय 29 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की अनुशंसा करते हैं।

(ङ.) प्राधिकारी पाटन मार्जिन के समान अथवा कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की अनुशंसा करने का विचार रखते हैं ताकि पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर किया जा सके। तदनुसार संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की गयी अधिसूचना की तारीख से नीचे दी गयी तालिका के कालम 9 और डालर/मी.टन में संबद्ध वस्तुओं के पहुँच मूल्य के बीच के अंतर के समान अंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए।

क्र.सं.	उप-शीर्ष	माल का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम देश/क्षेत्र का	निर्यात का देश/क्षेत्र	उत्पादक	निर्यातक	संदर्भ कीमत (अमरीकी डालर/मी टन)
	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
1.	29337100	6- हेक्सनेलेटम हेक्सनेलेटम	6- हेक्सनेलेक्टम (एपसिलॉन-केप्रोलेक्टम)	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ	मै0 डीएसएम नीदरलैंड	मै0 डीएसएम नीदरलैंड	
2.	29337100	6- हेक्सनेलेटम	6- हेक्सनेलेक्टम (एपसिलॉन-केप्रोलेक्टम)	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ	मै0 डीएसएम नीदरलैंड	मै0 डीएसएम नीदरलैंड के अलावा कोई निर्यातक	
3.	29337100	6- हेक्सनेलेटम	6- हेक्सनेलेक्टम (एपसिलॉन-केप्रोलेक्टम)	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ	मै0 डीएसएम नीदरलैंड के अलावा कोई उत्पादक	मै0 डीएसएम नीदरलैंड के अलावा कोई निर्यातक	
4.	29337100	6- हेक्सनेलेटम	6- हेक्सनेलेक्टम (एपसिलॉन-केप्रोलेक्टम)	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ	मै0 डीएसएम नीदरलैंड के अलावा कोई उत्पादक	मै0 डीएसएम	
5.	29337100	6- हेक्सनेलेटम	6- हेक्सनेलेक्टम (एपसिलॉन-केप्रोलेक्टम)	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ के अलावा कोई देश	मै0 डीएसएम नीदरलैंड	मै0 डीएसएम नीदरलैंड के अलावा कोई निर्यातक	
6.	29337100	6- हेक्सनेलेटम	6- हेक्सनेलेक्टम (एपसिलॉन-केप्रोलेक्टम)	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ के अलावा कोई देश	मै0 डीएसएम नीदरलैंड के अलावा कोई उत्पादक	मै0 डीएसएम नीदरलैंड के अलावा कोई निर्यातक	
7.	29337100	6- हेक्सनेलेटम	6- हेक्सनेलेक्टम (एपसिलॉन-केप्रोलेक्टम)	थाईलैंड	थाईलैंड	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	

29337100	6- हेक्सनेलैटेम	6- हेक्सनेलैक्टम (एपसिलॉन - केप्रोलैक्टम)	थाईलैंड	थाईलैंड के अलावा कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक
29337100	6- हेक्सनेलैटेम	6- हेक्सनेलैक्टम (एपसिलॉन - केप्रोलैक्टम)	नाइजीरिया	नाइजीरिया	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक
29337100	6- हेक्सनेलैटेम	6- हेक्सनेलैक्टम (एपसिलॉन - केप्रोलैक्टम)	नाइजीरिया	नाइजीरिया के अलावा कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक
29337100	6- हेक्सनेलैटेम	6- हेक्सनेलैक्टम (एपसिलॉन - केप्रोलैक्टम)	जापान	जापान	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक
29337100	6- हेक्सनेलैटेम	6- हेक्सनेलैक्टम (एपसिलॉन - केप्रोलैक्टम)	जापान	जापान के अलावा कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक

(23) इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील उपर्युक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पादक शुल्क एवं स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

(24) सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9(क)(5) के अंतर्गत समीक्षा के लिए आवेदन पत्र निश्चयात्मक शुल्कों की समाप्ति से छह महीने पहले दायर किया जा सकता है।

अभिजित सेनगुप्त, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION**FINAL FINDINGS**

New Delhi, the 16th September, 2004

Subject: Anti-dumping investigation. concerning imports of 6-Hexanelactam from Japan, European Union, Nigeria and Thailand in India. - Final Findings.

No. 14/15/2003-DGAD :— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Custom Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. Procedure

- i) The application for anti dumping duty of imports of 6-Hexanelactam (also known as Caprolactam) from Japan, European Union, Nigeria and Thailand appropriately updated was received on 12th September 2003 alleging dumping of 6-Hexanelactam originating in or exported from Japan, European Union, Nigeria and Thailand.
- ii) Preliminary scrutiny of the application filed by the applicant revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was, therefore, considered as properly documented.
- iii) On the basis of sufficient evidence submitted by the applicant the Authority decided to initiate the investigation against imports of subject goods from Japan, European Union, Nigeria and Thailand. The authority notified the Embassies of Japan, European Union, Nigeria and Thailand in New Delhi about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with the sub-Rule 5(5) of the Rules.
- iv) A public notice was issued dated 22nd September 2003 and published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods classified under custom Code **29337100** of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 originating in or exported from Japan, European Union, Nigeria and Thailand.
- v) A copy of the public notice was issued to the known exporters (whose details were made available by applicant) and the Governments of the

exporting country and were given an opportunity to make their views known in accordance with the Rule 6(2):

- vi) A copy of the application was forwarded to the known exporters and importers (whose details were made available by petitioner) of subject goods in India and were advised to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(3).
- vii) A questionnaire was sent to elicit relevant information to the 10 known exporters and 6 importers/user, in accordance with the Rule 6(4):
- viii) The Embassies of the subject countries in New Delhi were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise all concerned exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. Copies of the letter to exporters, application and questionnaire, sent to the known exporters were also sent to the Embassy of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3).

- ix) Response/information to the questionnaire/notification was filed by the following exporter/producer only.

- 1. M/s DSM, Netherlands (European Union)

There has been no cooperation from Thailand, Japan, Nigeria and other exporters from EU.

- x) - M/s Mitsubishi Corporation is a trading company and it represented Toray Industry, however, no questionnaire response was submitted.
- M/s BASF only informed of its interest in this case. No questionnaire response was submitted by M/s BASF, since they claimed that their annual shipment of the product under consideration has been negligible.
- There were six importers/users.

- 1. M/s Nirlon Ltd.,
- 2. M/s JCT Ltd.,
- 3. M/s NRC Ltd.,
- 4. M/s Modipon Ltd.,
- 5. M/s Century Enka Ltd.
- 6. M/s SRF Ltd.,

The six importers/users also informed of their interest in this case. The six importer/users and the cooperating exporter M/s DSM, Netherlands were represented by a single authorized representative. Only M/s Modipon Ltd., and M/s JCT Ltd., submitted questionnaire response. M/s Century Enka Ltd., submitted details of domestic purchases only. M/s Nirlon Ltd., M/s NRC Ltd., and M/s SRF Ltd., did not submit any questionnaire response. Name of M/s SRF Ltd., was inadvertently omitted in the disclosure statement.

- xi) Information regarding injury was sought from the applicant, which was also furnished by the applicant.
- xii) Non-confidential version of the evidence presented by various interested parties was kept available in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).
- xiii) Cost investigation was also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicant. M/s GSFC Vadodra was verified by the team on 27th/28th November, 2003 and M/s FACT, Kochi was verified on 17/18th May, 2004.
- xiv) The last date of submission was **1st November, 2003**. On request of interested parties, extension of time was granted upto 17th November, 2003.
- xv) Investigation was carried out for the period starting from 1st April, 2002 to 30th June, 2003 i.e. the period of investigation (POI).

xvi) Abbreviations/terms/values used:

a) Authority	Designated Authority
b) Subject Countries	Japan, European Union (EU), Nigeria and Thailand. (Vide Section 9A of Customs Tariff Act any country or territory as a whole is considered for assessment, identification and collection of anti-dumping duties).
c) Subject Goods/ Product under consideration	6-Hexanelactam (Caprolactam)
d) US\$	1 USD = Rs 48.4
e) Euro	1 Euro = US\$ 1.039
f) Domestic Industry/petitioner/ applicant	M/s GSFC and FACT Gujarat State Fertilizer and Chemicals Ltd., Vadodra; Fertilizers and Chemicals Travancore Ltd., Kochi
g) POI	Period of Investigation
h) Exporter (cooperating)	M/s DSM, Netherlands

- xvii) No compelling reasons, adequately substantiated, were brought before the Authority to recommend provisional measures. Authority found this case to be an appropriate case not to issue a preliminary finding.
- xviii) Public hearing was held on 29th April, 2004. It was attended by representatives of European Union importers and M/s DSM Netherlands (Exporter) and Domestic Industry.
- The following points were raised by domestic industry during various submissions made and during public hearing:-
 - (a) Normal value of M/s DSM the responding exporter should be on the basis of domestic sale and not third country exports.
 - (b) No non-confidential version of M/s DSM was received.
 - (c) Provisional measures must be imposed.
 - (d) It rebutted the contention of exporters on faulty initiation of the case and on self inflicted injury to the domestic industry.
 - The exporters raised following issues during various submissions made and during public hearing:-
 - (a) Full text of the non-confidential submission was not provided in time by domestic industry.
 - (b) Initiation of the anti-dumping investigation was violative of Rule 5 of the Anti-dumping Rules.
 - (c) Injury to domestic industry is due to internal reasons and policies of Government and not due to dumping.
 - (d) Ammonium Sulphate is an important co-product and its cost should be analyzed before arriving at a realistic NIP.
- xix) Written submissions followed by the public hearing was received by 14th May, 2004 which was exchanged on the same day.
- xx) Rejoinder to the written submissions was submitted on 20th May, 2004 by the interested parties.
- xxi) In accordance with Rule 16 of the Anti Dumping Rules essential facts under consideration of the Designated Authority which have formed the basis for the final findings were issued on 25th August, 2004 as a disclosure statement. Views expressed by all the interested parties were taken in to account while proposals on product under consideration, like article, domestic industry, dumping margin, injury margin and causality were issued for response. Notwithstanding, the facts given in the disclosure, Authority considered all submissions made by the interested parties, on merit, in order to arrive at a final determination.
- xxii) Interested parties were required to submit responses to the disclosure statement by 1st September, 2004. However, on request for extension from European Union, M/s BASF, M/s Modipon Ltd., and Association of Synthetic Fibre Industries, extension for submission of responses was granted by Authority till 8th September, 2004. Only responses from the

domestic industry, M/s DSM, Netherlands (cooperating exporter from EU) consolidated response of the six importers/users (listed in (x) above) and M/s BASF were received.

- xxiii) Hearing was granted to both the representatives of domestic industry as well as exporters, importers and industrial users.

(2) Initiation of anti dumping investigation

- a) Rule 5 relating to initiation of anti-dumping investigation of Anti-Dumping Rules are as follows:

"(1) Except as provided in sub-rule (4), the designated authority shall initiate an investigation to determine the existence, degree and effect of any alleged dumping only upon receipt of a written application by or on behalf of the domestic industry.

(2) An application under sub-rule (1) shall be in the form as maybe specified by the designated authority and the application shall be supported by evidence of -

- (a) dumping
- (b) injury, where applicable, and
- (c) where applicable, a causal link between such dumped imports and alleged injury.

(3) The designated authority shall not initiate an investigation pursuant to an application made under sub-rule (1) unless -

- (a) it determines, on the basis of an examination of the degree of support for, or opposition to the application expressed by domestic producers of the like product, that the application has been made by or on behalf of the domestic industry :

Provided that no investigation shall be initiated if domestic producers expressly supporting the application account for less than twenty five per cent of the total production of the like article by the domestic industry, and

- (b) it examines the accuracy and adequacy of the evidence provided in the application and satisfies itself that there is sufficient evidence regarding -

- (i) dumping,
- (ii) injury, where applicable; and
- (iii) where applicable, a casual link between such dumped imports and the alleged injury, to justify the initiation of an investigation.

Explanation. - For the purpose of this rule the application shall be deemed to have been made by or on behalf of the domestic industry, if it is supported by those domestic producers whose collective output constitute more than fifty per cent of the total production of the like article produced by that portion of the domestic industry expressing either support for or opposition, as the case may be, to the application."

(i) Issues raised by exporter, importers/users on initiation

- a) Interested parties were not provided with full and proper non-confidential version of the application by the Designated Authority.

- b) Differences in the levels of trade and sales quantities and their possible affects on "price comparability" has not been taken into account prior to initiation.
- c) A single identical normal value for diverse economies like Nigeria, EU, Japan Thailand could not pass the test of sufficiency or adequacy and accuracy.
- d) No information with respect to any exporter or producer from Nigeria was provided by domestic industry.
- e) Copies of journal "Polyamides and Intermediate (Tecnon)" relied upon was not provided along with the non-confidential version. Confidentiality cannot be claimed on published documents.
- f) No information on market share of the domestic industry has been provided.

(ii) Issues raised by Domestic Industry

- a) Each point raised by exporter was rebutted by domestic industry by quoting the relevant provisions of the Agreement as well as the obligations of Authority enshrined under Anti Dumping rules and various case laws of the WTO Panels(s) and appellate body(ies). Domestic Industry mentioned that their application was completed for the period upto March 2003 as the proposed POI however, Authority extended the POI upto June, 2003.

(iii) Views of Authority

- a) All the interested parties were provided with the non-confidential version of the application along with the public notice of initiation, exporter/importer questionnaire and a letter describing the methodology to be followed for the investigation by the Authority vide Rule 6(2) and Rule 6(3) of Anti Dumping Rules. Further all additional information on injury was made available to all the interested parties through a public file vide Rule 6(7) of the Anti Dumping rules. Information available in the public domain was open for access to the interested parties.
- b) Price comparability was done between the market value of the subject goods in the subject countries with the export prices of the subject goods in the subject countries. Adjustments were made to match the levels of trade before arriving at the dumping margin.
- c) Different normal values for different subject countries were considered based on the reasonable information made available.
- d) Market share of the domestic industry has been provided.
- e) Contention of exporter/importer is misplaced while expecting that the non-confidential versions of information provided by interested parties is verified by Authority before it is made available to the others interested parties. Needless to say that if a discrepancy of facts between the confidential version and non-confidential version is brought to the notice of Authority or is observed by Authority the respective version is sought to

be corrected by the concerned interested party and subsequently made available to other interested parties.

- f) Period of investigation has been from April, 2002 to June, 2003. The POI was chosen in a manner to bring the investigation as close to the date of initiation as possible and also to cover a representative period for better analysis of dumping as well as injury. Vide Rule 5(5) of Anti Dumping Rules the authority notified the Embassies of Japan, European Union, Nigeria and Thailand in India after an application was received from the applicant in the prescribed format under Rule 5(2) of Anti Dumping Rules. Once Authority was satisfied of the evidence provided by the domestic industry regarding dumping, injury and a causal link between the dumped imports and injury caused to domestic industry vide Rule 5(3) of Anti Dumping Rules, anti dumping investigations were initiated against imports of subject goods from the subject countries.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

(3) Product under consideration is 6-Hexanelactam, originating in or exported from Japan, European Union, Nigeria and Thailand. 6-Hexanelactam is a monomer and is a base material for production of Nylon-6. 6-Hexanelactam is produced and sold in both liquid and solid forms. Liquid form of the material can be used only by those customers who are very close to the source of the material. Producers in India use only solid form of the material. Solid form of the material is in white crystal or flakes form. There is no difference in the liquid or solid form, except for the difference in the physical forms. Further, the two solid forms also differ with each other only in terms of physical forms. It is commercially also known as Caprolactam.

6-Hexanelactam is primarily used in production of Nylon-6, which in turn is used for production of Nylon Yarn. Nylon Yarn is used for production of Nylon Fabric for use in (a) apparels; and (b) tyre cord fabric.

6-Hexanelactam is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act. Complete description of the product as per Customs Tariff Act is 29337100 6-Hexanelactam (epsilon-Caprolactam).

No issues were raised on product under consideration by any interested party.

C. LIKE ARTICLE

(4) 6-Hexanelactam (Caprolactam) produced by the applicant and imported from Japan, European Union, Nigeria and Thailand is comparable in terms of characteristics such as physical and chemical properties, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. Even though there are different manufacturing process/technologies involved for production of 6-Hexanelactam, the end product has comparable

specifications and is used interchangeably. The imported and the domestically sold products are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably. 6-Hexanelactam produced by the petitioner company is a like article to the goods imported from Japan, European Union, Nigeria and Thailand in accordance with the Anti-Dumping Rule 2(d) which provides as under:

"Like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the article under investigation;

Caprolactam is produced first in the molten form. Caprolactam monomer is preferred in molten form for production of Nylon 6 polymer however the melt has shelf life of maximum two weeks at a temperature of 85 degree centigrade and the melt has to be kept away from humidity. This can thus be used at Nylon production sites in the vicinity of the caprolactam production sites or have to be transported in heated vessels, specially equipped tankers to prevent uncontrolled solidification and degeneration. For users of caprolactam at distant locations the melt is flaked which provides some stability and thus increases the shelf life of flakes by upto one year. All other physical and chemical properties of the two forms are same and end use also remains the same. Users of flake have to reconvert flakes to the molten form to use it for production of Nylon 6. Relative stability of caprolactam flakes and the reconversion process involved plays an important role in pricing decision of the product (flakes). As evident from technical journals, in entire Asia flakes are used whereas in Europe (comprising 40% of the global production capacity) flakes are produced for exports only whereas the domestic user industry predominantly uses molten caprolactam for its Nylon 6 production. Prices of melt are guided more by the factor of consistent quality of melt and consistent supply of the melt to the users who get priority over flakes users. Domestic Industry in India sells flakes to its domestic buyers.

Issues related to the differences in form and in pricing structure of the melt and the flakes were raised by the applicant and the exporter. The same was subsequently verified by the team of Designated Authority. For price comparability comparison of the cost and prices of identical form would be appropriate. For reasons explained above, Authority considers both flakes and molten caprolactam as like articles of different forms vide Rule 2(d) of Anti-Dumping Rules. However, calculation made for differences in the physical form/characteristics in EU market resulting in difference in market values of the two forms are being dealt with in para (7).

D. DOMESTIC INDUSTRY

(5) The application was filed by M/s. Gujarat State Fertilizers & Chemicals Ltd., Vadodara (GSFC). It was supported by Fertilizers and Chemicals Travancore Ltd., (FACT). GSFC and FACT are the only producers of the product

in the Country and, therefore, account for total Indian Production. The petitioner satisfies the standing within the meaning of the Anti Dumping Rule 2 (b).

No issues have been raised by any interested party

E. Dumping Margin

(6) Normal value

"Normal value in relation to an article implies

(a) Comparable price, in ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory.

(b) When there are no sale of the like articles in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market, of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either.

- (i) Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory to an appropriate third country, or
- (ii) The cost of production of the subject goods in the country of origin along with reasonable addition for the administrative, selling and general costs and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6)

"Provided that in the case of imports of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin."

Annexure – I (Anti Dumping Rules)

4. "The amounts for administrative selling and general costs and for profits as referred to in subsection (I) of Section 9A of the Act, shall be based on

- (i) the actual amounts incurred and realized by the exporter or producer in question, in respect of production and sales in the domestic market of the country of origin of the same general category of articles;
- (ii) any [other] reasonable method, provided that the amount from profit so established shall not exceed the profit normally realized by the exporters or producers on sales of products of the same general category in the domestic market of the country of origin."

- 6(i) "While arriving at margin of dumping, the Designated Authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at the ex-factory level, and in respect of sales made at as nearly as possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability; including difference in conditions and in terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other difference which are demonstrated to affect price comparability."

The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with section 9A(1)(c) of the Custom Tariff Act.

(7) As explained in para (4) above Caprolactam has been sold entirely in molten form in the domestic market by M/s DSM, Netherlands. Majority of the domestic sale has been to its affiliated party. All exports made by M/s DSM to India as well as third countries other than India were in the form of flakes. Prices of melt always have been higher than that of flakes. Normal value was arrived at by making adjustments corresponding to a reasonable estimate of the market value of the two different forms on the basis of the cost of production of the flakes including selling, general and administrative expenses plus reasonable profits by the exporter on the finished product meant for exports. Normal value for the purpose has been constructed vide para 9(A)(1)(c).

Normal value was thus determined on the basis of verified cost of production after adding reasonable profits for cooperative exporter from EU when prices of molten caprolactam in exporters domestic market could not be compared with prices of caprolactam flakes exported to India due to different forms of products and particular marketing/pricing arrangements in which the two forms of the product are placed.

Normal value for non-cooperative exporters from EU was based on cost of production of the cooperative exporter plus maximum profit earned by cooperative exporter in the POI. This is as per the obligations enshrined in the Anti Dumping Rules.

Normal value for non-cooperative exporters from Thailand was based on the average prices shown by Technon Orbichem for Asian market during POI.

Normal value for non-cooperative exporters from Nigeria was based on constructed cost plus reasonable profits on the basis of facts available from domestic industry and international prices.

Normal value for non-cooperative exporters from Japan was based on average prices shown by Technon Orbichem for Asian market during POI.

Normal value for the purpose of calculation of dumping margin is tabulated in para (9) below.

(8) EXPORT PRICES:

Export price claimed by exporter was verified with importer data and transaction-wise imports data of Directorate General of Commercial Intelligence & Statistics (DGCIS) for the POI. During exporters verification the invoices of exports to India during POI were examined and after analyzing the adjustments made before FOB and after FOB stage (Ocean freight: marine insurance; Port expenses in Netherlands; Inland freight in Netherlands; Interests; Commission) ex-factory export price was taken as \$ ****/MT for cooperating producer/ exporter of EU and \$ ****/MT for non-cooperative exporters/producers of EU. Minimum export price of the cooperating exporter has been taken as the export price of the non-cooperating exporters to disadvantage non-cooperation.

Export price from Thailand, Nigeria and Japan was constructed on the basis of facts available based on the CIF prices in India as shown by DGCIS with adjustments made for ocean freight insurance, handling charges, commission etc.

(9) DUMPING MARGIN:

Considering the normal value and export price, as detailed above, dumping margin have been determined as shown below:

Country	Normal Value (\$/MT)	Export Price (\$/MT)	Dumping Margin	
			\$/MT Rs/MT	%
EU (M/s DSM, Netherlands)	****	****	****	(1.77)
EU (others)	****	****	****	10.11
Thailand	1136	930.08	205.92	22.14
Nigeria	1135	813.54	321.46	39.51
Japan	1136	996.37	139.63	14.01

(10) Injury Analysis & Causal Link

The injury analysis and causality established is given below. The following table is being used for the same.

Injury table												
SN	Particulars	1999-2000		2000-2001		2001-2002		April'02-June'03 (POI)		POI Annualized		
		Volume MT	Value Rs./La CS	Volume MT	Value Rs./La CS	Volume MT	Value Rs./La CS	Volume MT	Value Rs./La CS	Volume MT	Value Rs./La CS	
1	Natural and Potential Decline in Sales											
	Domestic Sales											
	Domestic Industry	MT 73534	50924	72290	51305	66985	35468	91641	57472	73313	45978	
	Trend	Indexed 100.00	100.00	98.31	100.75	91.09	69.65	99.70	90.29	99.70	90.29	
2	Profits & Sale											
	Cost of Production											
	Domestic industry- Weighted Avr.											
	Trend	Indexed	100.00		120.28		103.18		123.72		123.72	
	Net Sales Realisation											
	Trend	Indexed	100.00		102.62		76.13		90.35		90.35	
	Profit/Loss -Domestic										-950	
	Trend	Indexed	100.00		51.96		-1.44		-5.35		-5.35	
3	Employment (Trend)	100		100.5		94.1		88.8		88.8		
	Productivity (Trend)	100		101.5		99.8		93.5		93.5		
	Production of DI	MT 115370		117592		108411		119690		95752		

Trend	Index ed	100.00		101.93		93.97		83.00		83.00
4 Market share										
In Imports as per DGCIAS										
EU	MT	788	302	0	0.00	2078	1112	1651	681	1321
Japan	MT	0	0	445	366	316	158	1070	559	856
Nigeria	MT	0	0	0	0	264	110	852	369	682
Thailand	MT	0	0	308	204	0	0	612	297	490
Subject Countries	MT	788	302	753	570	2657	1381	4185	1906	3349
Trend	Index ed	100	100	96	189	337	457	431	531	431
Other Countries	MT	6	7	9	12	2250	1224	510	320	408
Total Imports	MT	794	309	762	582	4907	2605	4695	2226	3757
Market share										
EU	%	99.26		0.00		42.34		35.17		35.17
Japan	%	0.00		58.45		6.43		22.79		22.79
Nigeria	%	0.00		0.00		5.38		18.15		18.15
Thailand	%	0.00		40.42		0.00		13.04		13.04
Subject Countries	%	99.26		98.87		54.15		89.14		89.14
Trend	Index ed	100.00		99.61		54.55		89.80		89.80
Other Countries	%	0.74		1.13		45.85		10.86		10.88
In Demand										
Demand										
Trend	Index ed	100		107		101		109		109
Market share in Demand										
Subject Countries	%	0.96		0.85		3.18		4.02		4.02
Trend	Index ed	100		89.33		332.74		419.82		419.82
Other Countries	%	0.01		0.01		2.70		0.45		0.45
Indian Industry	%	99.04		99.14		94.12		95.53		95.53

Trend	Index ed	100.00		100.10		95.04		96.46		96.46	
6. Production											
Domestic industry	MT	115370		117592		108411		119690		95752	
Capacity	MT	120000		120000		120000		150000		120000	
Capacity Utilisation	%	96.14		97.99		90.34		79.79		79.79	
Trend		100.00		101.93		93.97		83		83	
7. Return on capital employed	Indexed		100		84.7		58.2		50.1		50.1
8. Cash Profit of domestic industry	Indexed		100		59.3		16.1		-61.1		-48.9
Trend	Indexed		100.00		59.28		16.13		-48.88		-48.88
9. Inventories											
Domestic industry											
Trend	Index ed	100.00		22.94		49.57		24.46		24.46	
10. Wages											
Domestic industry	Indexed		100		106.8		138.1		143.3		114.7
11. Growth											
Growth in Turnover	Indexed		-		0.88		-30.65		12.60		-9.92
Growth in Sales Volume	Indexed		-		-1.69		-8.91		-0.30		-0.30
Growth in demand indexed	Indexed				7.03		1.35		9.08		9.08

(11) Injury Analysis & Casual Link

The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry and an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry including parameters tabulated above for the period from 1999-2000 to June 2003 with trend analysis is given below for each parameter. Imports from Japan, EU, Thailand and Nigeria are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations and it is proposed to cumulatively assess the effect of such imports since margin of dumping is more than two percent expressed as percent of export price (excluding exports by M/s DSM) and the volume of the imports from each country is more than three percent of the import of like article and in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.

Only dumped volumes have been considered for the sake of injury analysis.

Importers/users have indicated that caprolactam produced by Domestic Industry is used along with the imported product.

(i) Sales:

Domestic sales of the domestic industry remained at almost similar levels however value of sales declined. Sales volumes of domestic industry have not declined, given significant increase in demand as a result of increased demand in automobiles and hence tyre production. Almost entire demand increase has gone to foreign producers as there is no increase in sales of the domestic industry. Sales of the domestic industry remained constant in fact marginally declined by 0.30 %, even when the Indian Producers had unutilized capacities and their production had fallen. Further, given the level of price undercutting and repeated requests by the consumers to reduce the prices in the face of cheaper imports, the potential decline in sales is also equally important. Applicants had received several letters from consumers requesting for price reduction citing lower price of imports.

The interested parties have argued that the sales of the domestic industry have increased. Sales volumes have almost remained stagnant. Further, whereas the demand grew by 9 %, sales of the domestic industry declined marginally, as argued in the previous para.

(ii) Profits and sale:

Cost of production of domestic industry increased by 23 points (in a hundred point index) but sales realization decreased by 10 points thereby converting the profits made by domestic industry in 1999-2000 to losses in June'03.

Profits of the domestic industry have significantly declined. Domestic Industry landed in a situation of financial losses in 2003-03 from a situation of profit at the beginning of the injury period.

(iii) Output:

Productivity per employee of the company decreased from 1999 to June 2003. Although the domestic industry has the capacity to cater to the entire domestic user industry.

Production of Caprolactam for the domestic industry has declined significantly. Even though the petitioners are in the business of this product for a long and even when the demand of the product witnessed positive growth, it has suffered loss of production for this vital product, as the growth has largely gone to imports from the subject countries.

(iv) Market Share:

Volume of imports of the subject countries increased 4 times during the injury analysis period but the share of imports from subject countries to total imports declined by 10 points due to other countries increasing their volume of exports to India. Share of imports to total demand in the country has increased substantially.

- Imports from Japan, European Union, Nigeria and Thailand have increased in absolute terms. Slight decline in the imports in the current year vis-à-vis preceding year can be seen against the steep increase in the imports as compared to 1999-00 and 2000-01;
- Imports have increased in relation to production of the domestic industry;
- Imports have increased in relation to demand of the subject goods in India.

(v) Capacity utilisation:

Capacity utilisation of the company has decreased by 17 points in the injury period. Since there is no change in the capacities created, utilization of capacity follows the same trend as that of production. The capacity utilization of the domestic industry declined.

(vi) Return on capital employed:

Return on capital employed has reduced by 50 points in the injury period. Return on investments follow the same trend as that of profits. While the return on investment was earlier positive, the same has become negative in 2002-03 due to dumped imports forcing the domestic industry to reduce the prices.

(vii) Inventory:

Inventory was reduced in 2000-2001 and the level was maintained either by export sales or lowering production of caprolactam. The domestic industry was earlier holding very high level of inventories. Continuous efforts of the domestic industry brought down the inventory levels. Reduction in inventory levels was made possible also because of the price reduction made by the domestic industry.

(viii) Wages and Employment:

Wages and employment have not been considered as the factor effecting the domestic industry because of dumped imports. In case of productivity per employee, both the Companies are multi product Companies and it is not feasible to segregate number of persons employed for Caprolactam alone. In fact, both the Companies have common employees between Caprolactam plant and Other Plants.

(ix) Growth:

Growth with respect to turnover or sales volume has been negative whereas demand has grown by 9 points. Thus, the growth of the domestic industry was sub optimal due to imports from the subject countries.

As it may be seen from the above para, the growth of the domestic industry has been less than the market growth. Such sub-optimal growth of the domestic industry when the demand grew more than growth of the domestic industry and when the domestic industry had available capacity to produce and supply goods clearly show injury caused to the domestic industry due to dumped imports, as reflected in growth of the domestic industry.

(x) Dumping Margin:

Dumping margin has ranged between 10.11% to 39.51% from the subject countries. Dumping margins in respect of imports from Japan, European Union, Nigeria and Thailand are not only above de-minimis but also significant.

(xi) Ability to raise capital investments:

The domestic industry has shown poor returns on capital employed with a downward trend and cash losses which have resulted in eroding the domestic industries capacity to raise capital investments specifically for this product.

The reducing profitability of the domestic industry has adversely impacted the cash flow of the domestic industry, although in case of multi product companies like the two applicant companies, it is not feasible to have cash flow separately for the product under consideration.

(xii) Effects of only dumped imports were assessed. No difference in technology of the domestic producer and the foreign producers were highlighted. The technology was mostly acquired from foreign producers like M/s DSM and M/s BASF. Export performance of the domestic industry has been segregated while assessing the injury parameters. No information on proceedings against the domestic industry on trade restrictive practices have been brought to the notice of the Authority.

- (a) Volume and value of imports not sold at dumping prices:** - It would be seen that (i) volume of imports from other countries are de-minimis; (ii) import price from other countries are significantly higher than the import price from the subject countries. Thus,

imports from other countries have not contributed to the injury to the domestic industry.

- (b) **Contraction in demand:-** From the injury statement it would be seen that the demand of the product under consideration has registered a positive growth. Thus, contraction in demand is not a possible reason, which could have contributed to injury to the domestic industry.
- (c) **Changes in the patterns of consumption:-** The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. Changes in the pattern of consumption could not have, therefore, contributed to the injury to the domestic industry.
- (d) **Developments in technology:-** Technology for production of the product has not undergone any change. Developments in technology is, therefore, not a factor of injury.
- (e) **Export performance:-** Export volumes of the domestic industry have declined. Even when the demand has increased, the sales volumes of the domestic industry in the domestic market have declined. Negative growth faced by the domestic industry, when the product is showing growing demand, is clearly due to dumping. Exports made by the domestic industry were commensurate to the difference of the growth in demand and decline in sale of the domestic industry. Another option with the domestic industry was to curtail production, which would have resulted in significant increase in the cost of production. Thus, exports of the product have helped the domestic industry in lowering the cost of production. The domestic industry information for the domestic and export market have been segregated. Therefore, the injury claimed by the domestic industry from sales of Caprolactam in the domestic market is in no way adversely influenced because of exports made by the petitioners.
- (f) **Productivity:-** Profitability has been worked out considering the best achieved production by domestic industry in the injury period. The cost of production of the domestic industry at this enhanced level also shows that the selling price was below this normated cost of production.

Productivity has not been the cause of the injury as it has remained fairly constant while prices and volumes have dipped during POI.

(12) Price undercutting

Price undercutting determined by comparing the weighted average net sales realization of the domestic industry with the landed price of imports shows that the landed price of imports is below the selling price of the domestic industry, thus resulting in price undercutting, between 10 - 20%.

Landed price of imports is significantly below the selling price of the domestic industry, resulting in price undercutting. The number of consumers of Caprolactam is quite limited in the Country. The consumers are well aware of global prices. Letters written by the consumers, asking petitioners to reduce the price, citing the prices at which material is available from a number of countries, were presented to Authority, which clearly show that the applicants have been injured because of the price undercutting.

Existence of price undercutting in this case was the sole reason for the domestic industry to reduce the prices. The domestic industry is forced to offer lower prices in view of dumped prices offered by the Foreign Producers. In spite of offering lower prices, the domestic industry has been forced to face price undercutting. Existence of price undercutting is in spite of price reductions made by the domestic industry.

(13) The net sales realization was determined exclusive of rebates/discounts, commission, taxes and duties. Net sales realisation ranged between Rs. 45000/MT to Rs. 65000/MT.

(14) Price underselling

Price underselling is derived by comparing weighted average non-injurious price of the domestic industry with the landed price of imports of subject goods into India. Price underselling of dumped goods deprived domestic industry of prices it ought to get from sale of the subject goods in the domestic market. Price underselling was to the extent of 10-40%.

(15) Price suppression

There has been a decrease in the sales realization despite increase in cost of production of the subject goods landed value of the dumped imports at the level of cost of production of the domestic industry.

Landed value of the dumped imports is below the cost of production and non-injurious price of the domestic industry. Further, while cost of production of the subject goods has increased, the selling-price has declined as a result of decline

in the export price. Thus, imports are preventing the domestic industry from effecting legitimate price increases.

- (a) Losses being suffered in Ammonium Sulphate: - Production of product under consideration results in production of Ammonium Sulphate also. In fact, both the companies have treated Ammonium Sulphate as joint product and have apportioned costs between product under consideration and Ammonium Sulphate. Losses being suffered in production and sale of Ammonium Sulphate have not been unduly charged to the product under consideration.
- (b) Losses being suffered in fertilizers: - The exporter/importer have argued that the petitioners are primarily engaged in production of fertilizers. However, share of chemicals & petrochemicals in case of GSFC was around 36%, while the same in case of FACT was about 33% in 2002-03.

Further, in chemicals and petrochemicals, 6-Hexanelactam constituted a significant proportion. In case of GSFC, 6-Hexanelactam constituted 44%, while the same was 98% in case of FACT in 2002-03.,

In terms of investment, the investment in caprolactam has been very significant. In case of GSFC, 53% of net block was in Caprolactam in the year 2002-03.

Thus product under consideration is insignificant to the companies concerned.

(16) Landed Value

The landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under Customs Tariff Act, 1962 and applicable level of custom duties except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A of the Custom Tariff Act, 1975.

The landed value of imports has been determined as the CIF import price (sources from DGCIS) plus 1 % landing charges and applicable basic customs duties for the POI.

- (17) The price effect of the dumped imports is evident from the price undercutting of between 10-20% and price underselling between 10-40%. The net sales realization has dipped and has remained at the level of the cost of production. Profits have been down with reduction in return on capital employed

whereas the demand has increased. Employment, wages are not being considered for the injury analysis.

(18) The volume effect is pronounced in terms of increase in imports from subject countries while domestic sale remained constant thus reducing the share of domestic industry in the overall demand of all subject goods.

Since increase in demand did not result in increase in production, capacity utilization and productivity declined to the extent of forcing a shut down of one of the plants. Levels of inventory was maintained after 2000-2001 with the help of export sales or lowering production of caprolactam. Higher inventory for a long period could not be maintained since the product has limited shelf life and is hygroscopic by nature.

(19) Non-Injurious Price (NIP)

The Authority determined a Non-injurious price for the subject goods after a detailed analysis and scrutiny and verification of information provided by the applicant companies.

The cost information on all relevant factors concerning the production and the production process were called for in the prescribed proforma for the period of investigation and for the preceding years. The actual cost of production of the subject goods for the domestic industry has been used to determine nominated cost of production on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP). In the determination of Non-injurious price for the domestic industry, the Authority has examined and analyzed in detail all the relevant factors including cost of raw material used in the production of subject goods, the consumption thereof, the cost of utilities such as power, water etc., cost of labour, depreciation cost, selling and administrative expenses and interest cost. The factors such as investments made in the plants and the capacity utilization have also been examined in the cost analysis. All these factors have been determined with reference to the basic books of accounts and production and financial statements. The Non-injurious price for the domestic industry has been determined by addition to the cost of production of a reasonable profit margin on the capital employed by the applicants.

Exporter stated that ammonium sulphate is an important coproduct and its cost should be analysed before arriving at a realistic NIP.

Authority worked out the NIP of Caprolactam after verifying the costs apportioned between the two products and hence no costs pertaining to ammonium sulphate could have been loaded to the cost of Caprolactam.

(20) Indian Industry's Interest & other issues

It is understood that Caprolactam always jointly produces ammonium sulphate. Depending on commercial requirement of ammonium sulphate as a nitrogenous

fertilizer the ratio of ammonium sulphate produced can be varied from 1.5 to 4.5 times of production of Caprolactam. Old Caprolactam plants globally sold ammonium sulphate as a potent nitrogenous fertilizer till its applications was restricted only to specific areas by the use of Urea which has high nitrogen content. Thus new Caprolactam plants produce less of ammonium sulphate in comparison to old plants. Parallely, technology has also been developed to produce Nylon chips without Caprolactam as raw material which is in commercial use.

It is understood there are around 43 plants around the globe with overall capacity of approximately 4.5 million MT. Demand of Caprolactam for Nylon 6 plant globally is around 3.8 million MT. Subject countries comprise approximately 40% of the global capacities. Europe has 30% of the global capacity to produce caprolactam whereas its requirement for Nylon 6 is 22%. Capacity to produce Caprolactam in Asia (excluding Japan) is 19% of the global capacity but its requirement or Nylon 6 application is 41% of the global requirement. This leaves a gap for imports to flow in this region. Of the 43 plants around the globe 19 plants have capacities between 50000-100000 MT each per annum and 7 plants have capacity less than 50000 MT each per annum. Majority of the plants (22) have BASF/DSM technology.

Total capacity of India is 120000 MT of Caprolactam production. The same is adequate to meet the requirement of Nylon 6 producers which require Caprolactam approximately in the ratio 1:1. It is understood that approximately 60% of the Nylon 6 requirement is in textiles and allied sector whereas only 40% of the requirement is in industrial application and resin. Nylon tyre cord fabric comprises less than 10% by weight of the tyres which is bulk of the use of non textiles sector.

Demand of the Nylon 6 user is also increasing despite presence of other grades of Nylon in the market which is produced from raw material other than caprolactam. Technology used to produce Caprolactam in India and the scales of operation are at par with global standards.

The Authority holds that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

The Authority recognizes that though the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products fair competition in the Indian market will not be adversely affected by these anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by the dumping practices and would prevent the decline of the domestic industry and

help maintain the availability of a wider choice of the subject goods to the consumers. Imposition of anti-dumping measures would also not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

(22) Conclusion

It is seen, after considering the foregoing, that:

- a) The subject goods in all forms originating in or exported from the subject country have been exported to India below its normal value.
- b) The domestic industry has also suffered material injury by way of financial losses due to suppressed Net Sales Realisation (NSR) on account of price undercutting / underselling caused by low landed prices of the dumped subject goods.
- c) The injury has been caused to the domestic industry by dumping of the subject goods originating in or exported from the subject countries.
- d) The Authority recommends anti-dumping duty on imports of subject goods falling under Chapter 29 originating in or exported from the subject countries.
- e) The Authority considered to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or lower so as to remove the injury to the domestic industry accrued on account of dumping. Accordingly, final anti dumping duties equal to the difference between the amount of Column 9 of the Table below and landed value of subject goods in \$/MT be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from subject country.

Sl. No	Sub-heading	Description of goods	Specification	Country/Territory of origin	Country/ Territory of export	Producer	Exporter	Reference Price (USD/MT)
	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
1.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	European Union	European Union	M/s DSM Netherlands	M/s DSM Netherlands	No duty
2.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	European Union	European Union	M/s DSM Netherlands	Any exporter other than M/s DSM	1394.05
3.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	European Union	European Union	Any producer other than M/s DSM Netherlands	Any exporter other than M/s DSM Netherlands	1394.05
4.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	European Union	European Union	Any producer other than M/s DSM Netherlands	M/s DSM	1394.05
5.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	European Union	Any country other than European Union	M/s DSM Netherlands	Any exporter other than M/s DSM Netherlands	1394.05
6.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	European Union	Any country other than European Union	Any producer other than M/s DSM Netherlands	Any exporter other than M/s DSM Netherlands	1394.05
7.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	Thailand	Thailand	Any producer	Any exporter	1421.09
8.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	Thailand	Any country other than Thailand	Any producer	Any exporter	1421.09

9.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	Nigeria	Nigeria	Any producer	Any exporter	1400.25
10.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	Nigeria	Any country other than Nigeria	Any producer	Any exporter	1400.25
11.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	Japan	Japan	Any producer	Any exporter	1441.86
12.	29337100	6-Hexanelactam m	6-Hexanelactam (epsilon - Caprolactam)	Japan	Any country other than Japan	Any producer	Any exporter	1441.86

(23) An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act 1975.

(24) An application for review under Section 9(A) (5) of the Customs Tariff Act, 1975 may be filed six months before expiry of the definitive duties.

ABHIJIT SENGUPTA, Designated Authority